कोरोना की मार ?

कोरोना वायरस का फैलना और उससे हो रही मौतें जितने बड़े दुख, उतनी ही बड़ी चिंता का बात है। दुनिया में 3,000 से ज्यादा लोग इस बीमारी के शिकार हुए हैं और संक्रमित लोगों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। सबसे पहले भारत की चिंता करें यह बात अब छिपी नहीं है कि कम से कम 50 देशों तक यह वायरस कमोबेश पहुंच चुका है। विशेष रूप से पांच देशों की स्थिति ज्यादा चिंताजनक है, चीन, ईरान, इटली, कोरिया और

सिंगापुर। इन पांच देशों सहित 12 देशों से आने वालों की जांच का फैसला भारत सरकार ने किया है, तो स्वागत है। हालांकि संभव हो, तो विदेश से आने वाले सभी यात्रियों की जांच करना ज्यादा बेहतर होगा। यह गौर करने की बात है कि भारत में अब तक पांच मामले सामने आए हैं, जिनमें से तीन लोग सेहतमंद होकर घर लौट गए हैं। भारत में सबसे पहले संक्रमित हुई महिला भी ठीक हो गई है। बीमारी से लड़ने में भारत की सफलता का यही प्रतिशत आगे भी बना रहे, इसमें न केवल देश, बल्कि दुनिया की भलाई है। बीच-बीच में चीन से भी अच्छी खबरें आ रही हैं, वहां भी नए मामलों में कमी आई है। चीन पूरी सावधानी बरत रहा है और अपने बहुत जरूरी नागरिकों को भी भारत या अन्य देशों में जाने नहीं दे रहा है।

कोरोना वायरस इंसानों को ही नहीं, विश्व अर्थव्यवस्था को भी बीमार कर रहा है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) ने सोमवार को जारी एक विशेष रिपोर्ट में कहा है कि कई देशों में कोविड-19 बीमारी फैलने से वैश्विक अर्थव्यवस्था मौजूदा तिमाही में एक बड़े झटके से गुजर सकती है, जो 2009 में आई मंदी के बाद पहली बार होगा। हालांकि 2020 के लिए ओईसीडी ने वैश्विक आर्थिक वृद्धि के अपने अनुमान को करीब आधा प्रतिशत ही घटाया है, लेकिन यह भी कहा है कि यदि वायरस दुनिया में व्यापक तौर पर फैल जाता है और गर्मी में भी इसका असर बरकरार रहता है तो यह वृद्धि 2.9 प्रतिशत के अनुमान की लगभग आधी, यानी 1.5 प्रतिशत तक भी पहुंच सकती है। विश्व बैंक पहले ही कोरोना की वजह से ग्लोबल ग्रोथ रेट में एक फीसद तक की गिरावट की आशंका जता चुका है। कोरोना की वजह से दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं चीन और अमेरिका के कारोबार में सुस्ती गहरा रही है, जिसका असर पूरी दुनिया पर पड़ना तय है। चीन ग्लोबल स्तर पर विभिन्न जिंसों (कमोडिटीज) का सबसे बड़ा खरीदार है। वहां मांग में कमी के कारण विश्व स्तर पर कच्चा तेल, तांबा, सोयाबीन जैसे कई उत्पाद सस्ते हो जाएंगे लेकिन जिन देशों की अर्थव्यवस्थाएं चीन को इन चीजों की आपूर्ति पर निर्भर करती हैं उनकी, खासकर लैटिन अमेरिका के कई देशों की हालत खराब हो जाएगी। चीन से आयात होने वाली जिन चीजों पर भारतीय उद्योग निर्भर हैं उन्हें लेकर भी दिक्कतें शुरू हो गई हैं। कच्चे माल की कमी और उत्पादन लागत बढ़ने से हमारे निर्यात की मुश्किलें और बढ़ सकती हैं। हालांकि कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार हमारी विकास दर पर कोरोना के असर की बात करना अभी जल्दबाजी होगी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का कहना है कि सरकार इस मामले में सतर्क है और हर स्तर पर विकल्प तलाशे जा रहे हैं।

भरत सिंह चौहान
संपादक

कोरोना वायरस इंसानों को ही नहीं, विश्व अर्थव्यवस्था को भी बीमार कर रहा है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) ने सोमवार को जारी एक विशेष रिपोर्ट में कहा है कि कई देशों में कोविड-19 बीमारी फैलने से वैश्विक अर्थव्यवस्था मौजूदा तिमाही में एक बड़े झटके से गुजर सकती है, जो 2009 में आई मंदी के बाद पहली बार होगा। हालांकि 2020 के लिए ओईसीडी ने वैश्विक आर्थिक वृद्धि के अपने अनुमान को करीब आधा प्रतिशत ही घटाया है,

पुष्पांजली टुडे

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष 06, अंक 01, मार्च 2020,
मूल्य 30 रु, पृष्ठ 44

संरक्षक	**बहादुर सिंह चौहान**
संपादक	**भरत सिंह चौहान**
प्रबंध संपादक	शैलेश सिंह कुशवाह, अनिल उपाध्याय
कार्यकारी संपादक	राजानल शर्मा
सहायक संपादक	धीरेंद्र सिंह दांगी
उपसंपादक	अरविंद सिंह नरवरिया
	अर्पित गुप्ता
	प्रदीप नागेन्द्र सिकरवार
	विपिन तोमर,
	शशिभूषण चौहान (मप्र)
मार्केटिंग हैड	रजनी तोमर
कानूनी सलाहकार	एड. आर. के. जोशी
ऑल इंडिया रिपोर्टर	अन्जू भरमोरिया
राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी	आर एस रजक
मप्र ब्यूरो चीफ	पंकज त्रिपाठी

ब्यूरो प्रमुख

नरेन्द्र शर्मा	:	हरियाणा
तुलसीराम प्रजापति	:	छत्तीसगढ़
संदीप प्रधान	:	ग्वालियर संभाग
राजा दुबे	:	सीहोर
केवल राम मालवीय	:	इंदौर
सोनू कुमार माथुर	:	एटा, (उत्तर प्रदेश)
प्रवेन्द्र सिंह	:	आगरा (उत्तर प्रदेश)
अरूण कुमार साहू	:	सतना
मंगल सिंह परमार	:	धौलपुर राजस्थान)
केशव प्रसाद शर्मा	:	मुरैना
सादिक मिर्जा	:	खरगौन
मोहन मांझी	:	गोहद
अमित शर्मा	:	ग्वालियर
सुरजीत राजावत	:	ग्वालियर
आदित्य सिंह		पोरसा

कार्यालय

ए-ब्लॉक 404 भाऊसाहब पोतनीस, इन्क्लेव, मुरार रोड गोले का मंदिर ग्वालियर मध्य प्रदेश

संपर्क: 8269307478, 7999246560

www.pushpanjalitoday.com, Email-pushpanjalitoday@gmail.com

इस अंक में

महलों का गढ़ भोरमदेव मंदिर 37

मोदी की हुंकार.... 36

ज़रा याद करो कुर्बानी 26

नमस्ते ट्रम्प 06

राहुल गांधी ने.... 8

कोरोना वायरस 15

शिक्षा विशेष

सिनेमा 40

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक-भरत सिंह चौहान। कंचन प्रिंटिंग प्रेस-निम्बालकर का बाड़ा, तेली की बजरिया नियर पी.एंड.एन. बैंक नया बाजार लश्कर जिला ग्वालियर म.प्र .से मुद्रित तथा, दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास, गोवर्धन कॉलोनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, जिला ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-भरत सिंह चौहान। समाचारों के चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार दूरभाष : 8269307478 Mail: pushpanjalitoday@gmail.com Web. www.pushpanjalitoday.com

सिंधिया के मास्टर स्ट्रोक से बैकफुट पर कमलनाथ

अब भाजपा के हुए महाराज

अरविंद सिंह नरवरिया
उपसंपादक

मध्य प्रदेश की कमलनाथ सरकार ने अभी डेढ़ साल भी पूरे नहीं किए हैं लेकिन अभी यह इतने भीषण संकट में पड़ गई है कि इसका बचना मुश्किल लगता है। मुख्यमंत्री कमलनाथ ने अभी हार नहीं मानी है, लेकिन लगभग 20 विधायकों के समर्थन वाले ज्योतिरादित्य सिंधिया के बीजेपी में शामिल हो जाने के बाद अब कांग्रेस को किसी चमत्कार का ही सहारा रह गया है।

कमलनाथ सरकार रहे या जाए, पर कांग्रेस नेतृत्व को उन सवालों का सामना करना चाहिए, जो इस संदर्भ में लगातार उठते रहे हैं। अभी उसका कहना है कि बीजेपी विधानसभा चुनावों में मिली हार के बाद से ही इस सरकार को गिराने में जुटी थी। कुछ प्रेक्षकों ने इस आरोप से सहमति भी जताई है। उनका कहना है कि सत्तारूढ़ दल के विधायकों से इस्तीफे दिलवाकर सरकार को अल्पमत में ला देने और फिर उपचुनावों के जरिये उनको दोबारा निर्वाचित करा लेने का जो फॉर्मूला कर्नाटक में कामयाब रहा, उसे अब मध्य प्रदेश में भी दोहराया जा रहा है। इस व्याख्या में सचाई के अंश हो सकते हैं, लेकिन पूरे घटनाक्रम पर नजर डालें तो लगता यही है कि मध्य प्रदेश में जो कुछ हो रहा है, उसका सीधा संबंध कांग्रेस के शीर्ष पर दिख रहे शून्य से है। देश की सबसे पुरानी पार्टी पिछले लोकसभा चुनावों में मिली हार के बाद से ही एक ऐसे संकट से गुजर रही है जिसकी बराबरी देश के आधुनिक राजनीतिक इतिहास में शायद ही खोजी जा सके। आम चुनाव के नतीजों की समीक्षा के लिए आयोजित राष्ट्रीय बैठक में हार की जिम्मेदारी लेते हुए राहुल गांधी ने साफ कर दिया कि वह खुद तो पार्टी अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे ही रहे हैं, साथ ही यह भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि गांधी-नेहरू परिवार से कोई भी व्यक्ति पार्टी का अगला अध्यक्ष नहीं बनेगा। तब से अब तक एवजी

ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे सशक्त नेता को कांग्रेस ने क्यों खो दिया?

महाराष्ट्र में सरकार बनाकर जो कांग्रेस दो कदम आगे बढ़ी थी, वह मध्य प्रदेश में ज्योतिरादित्य सिंधिया के पार्टी से जाने के बाद एक कदम पीछे गई लगती है। अब मध्य प्रदेश में अगर कांग्रेस सरकार नहीं बचा पाएगी, तो महाराष्ट्र की कामयाबी पर पूरी तरह से पानी फिर जाएगा। खैर, मध्य प्रदेश में किसकी सरकार रहेगी, कौन मुख्यमंत्री बनेगा, जैसे सवालों से अलग सबसे बड़ा सवाल आज यह है कि ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे सशक्त नेता को कांग्रेस ने क्यों खो दिया?

उपायों से ही कांग्रेस चल रही है। पार्टी के अंदर की धड़ेबाजी शीर्ष स्तर पर मौजूद इस नेतृत्वहीनता से कमजोर नहीं हुई। इसके बजाय हर राज्य में एक धड़ा दूसरे धड़े को कमजोर पाकर उसे निपटाने में जुट गया। राहुल गांधी के संक्षिप्त कार्यकाल में जो भी नेता उनसे नजदीकी के बल पर मजबूत हुए थे, उनके हटते ही वे अनाथ हो गए। हरियाणा और झारखंड के बाद मध्य प्रदेश तीसरा ऐसा राज्य है जहां राहुल के करीबी सबसे बड़े नेता ने कांग्रेस में अलग-थलग पड़ने के बाद बीजेपी की उंगली पकड़ी है। यह सिलसिला अगर ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ शुरू नहीं हुआ है तो उनके जाते ही खत्म भी नहीं होने वाला। पार्टी की इस बदहाली पर किसी न किसी संयोग से बीच-बीच में परदा पड़ता रहा। महाराष्ट्र और झारखंड में इसका सत्ता में आ जाना ऐसा ही संयोग रहा, लेकिन परदा पड़ने से बीमारी ठीक नहीं होती। बीमारी का इलाज तो उसे समझ कर उसकी जड़ों पर चोट करने से ही होता है। अफसोस की बात है कि ऐसी कोई चर्चा अभी कांग्रेस में सुनाई नहीं दे रही।

कांग्रेस ने ग्वालियर संभाग में क्या खोया है, यह आने वाले दिनों में पता चलेगा, लेकिन सिंधिया जो बातें बोलकर भाजपा में शामिल हुए हैं, वह कांग्रेस, राजनीति और देश, तीनों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। भाजपा में जाते हुए भी उनके यह कहने का गहरा अर्थ है कि 'मन आज दुखी भी है और व्यथित भी'। अव्वल तो यह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण बात है कि सिंधिया जैसा सशक्त नेता कांग्रेस में दुखी और व्यथित था, तो अनेक कांग्रेस कार्यकर्ताओं के दिल पर क्या बीत रही होगी? संभव है, सिंधिया का यह दुख लोकसभा चुनाव में उनकी हार की वजह से पैदा हुआ हो, पर तब भी यह कांग्रेस हाईकमान की नाकामी है। जीत के जश्न कहीं भी मनाए जा सकते हैं, लेकिन हार की गमी को हमेशा संवेदनशील कंधों की जरूरत होती है। लगता है, हताशा-निराशा के आंसुओं से गीले होकर सशक्त होने वाले कंधों का कांग्रेस में अभाव हो गया है। ज्यादातर लोगों को यह आभास हो गया था कि सिंधिया किस ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन कांग्रेस ने उन्हें मना लेने का कोई जतन नहीं किया। सिंधिया ने दोटूक कहा है, कांग्रेस जैसी पार्टी पहले थी, वैसी आज नहीं रही। लगे हाथ उन्होंने इसके तीन कारण भी बड़ी साफगोई से गिना दिए। पहला, कांग्रेस वास्तविकता से इनकार कर रही है। दूसरा, नई विचारधारा और तीसरा, नेतृत्व को मान्यता नहीं मिलना। सिंधिया यहां तक बोल गए कि कांग्रेस में रहकर जनसेवा नहीं की जा सकती। सचमुच कांग्रेस को इसका जवाब देना चाहिए, लेकिन उसके अनेक नेता तो पूर्व सिंधिया राजघराने को धिक्कारने में लगे हैं। यह हमारी सतही व कुतर्की राजनीति का गलत स्वभाव ही है, जो पार्टी से जाने वाले को भर मन धिक्कारता है और आने वाले को पवित्रतम करार देता है। लेकिन इन तमाम हल्के बयानों से आगे कांग्रेस को वाकई सोचना चाहिए कि देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी को कैसा होना चाहिए? नए नेतृत्व से पुराने नेतृत्व की ओर लौटने की पहली बड़ी कीमत कांग्रेस ने चुका दी है।

आखिर क्यों भाजपा के हुए महाराज ?

ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रकरण से कांग्रेस के अंदर मौजूद युवा और बुजुर्ग नेताओं के मतभेद खुलकर सामने आ गए हैं। यहां युवा का मतलब राहुल गांधी की टीम से है, जबकि बुजुर्ग यानी सोनिया गांधी के करीबी नेतागण। यह मनमुटाव तो तभी से कायम है, जब सोनिया गांधी कांग्रेस अध्यक्ष पद पर राहुल गांधी की ताजपोशी करना चाहती थीं। सोनिया गांधी के इन करीबियों का मानना था कि राहुल गांधी के पार्टी प्रमुख बन जाने से उनकी उपयोगिता खत्म हो जाएगी और वे किनारे कर दिए जाएंगे। इसीलिए उन्होंने बार-बार इसकी राह में बाधा डाली, फिर भी वे सोनिया गांधी को रोक न सके। मगर पिछले साल लोकसभा चुनाव में शिकस्त के बाद जब राहुल गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष की अपनी जिम्मेदारी छोड़ दी, तब बुजुर्ग नेताओं की वही पुरानी टीम फिर से सक्रिय हो गई और उसने पार्टी पर अपनी पकड़ मजबूत बना ली। इससे युवा नेताओं को काफी तकलीफें हो रही थीं। साफ है, इन मुश्किलों से निजात पाने की शुरुआत ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पार्टी छोड़कर की है।

तमाम कयासों को विराम देते हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया आखिरकार भाजपा में शामिल हो ही गए। भाजपा में शामिल होने के तुरंत बाद उन्हें पार्टी की ओर से राज्यसभा का प्रत्याशी भी घोषित कर दिया गया। देखा जाए तो ज्योतिरादित्य सिंधिया का यूं कांग्रेस को छोड़कर भाजपा में जाना केवल राजनीतिक मौकापरस्ती नहीं,

बल्कि गांधी परिवार से प्रतिस्पर्द्धा की भावना का भी नतीजा है। जेपी नड्डा की मौजूदगी में भाजपा में शामिल होते वक्त उन्होंने गृह मंत्री अमित शाह के साथ-साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा करते हुए कहा कि देश का भविष्य उनके हाथों में सुरक्षित है। गौरलतब है कि कुछ समय पहले जब मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने का फैसला लिया था तो ज्योतिरादित्य सिंधिया उन कांग्रेसी नेताओं में प्रमुख थे, जिन्होंने पार्टी लाइन से अलग हटते हुए इस फैसले का स्वागत किया था।

ज्योतिरादित्य सिंधिया कहीं न कहीं अपने आप को राहुल गांधी से अधिक सक्षम मानते हैं और इसे वह देश के समक्ष प्रदर्शित भी करना चाहते हैं। राहुल गांधी और ज्योतिरादित्य सिंधिया बचपन से एक ही स्कूल- दून स्कूल में गए। इसके बाद दोनों सेंट स्टीफेंस कॉलेज में आए। दोनों ही बीच में अपनी पढ़ाई छोड़कर विदेश चले गए और आगे की पढ़ाई अमेरिका में की। इसके बाद दोनों ही तकरीबन एक साथ ही सक्रिय राजनीति में आए। ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने पिता माधवराव सिंधिया के असामयिक निधन के बाद वर्ष 2001 में राजनीति में सक्रिय हुए और राहुल गांधी 2003 में राजनीति में आए। इसके बाद ज्योतिरादित्य टीम राहुल के एक सक्रिय सदस्य बन गए। राहुल मनमोहन सरकार का हिस्सा नहीं बने, तो ज्योतिरादित्य भी शुरूआती दौर में मंत्री नहीं बने। गौरतलब बात यह है कि जहां राहुल गांधी स्वेच्छा से मंत्री नहीं बने, वहीं ज्योतिरादित्य मन मसोसकर मंत्री नहीं बने।

ज्योतिरादित्य सिंधिया को राहुल गांधी का अक्खड़पन अव्यावहारिक लगता रहा, किंतु मित्रता और शिष्टता के चलते वह अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं कर सके। वर्ष 2015 से 2019 के बीच ज्योतिरादित्य सिंधिया राहुल गांधी को और सक्रिय होने को कहते रहे, लेकिन राहुल कांग्रेस के अंदर के समीकरण और चक्रव्यूह को पार नहीं कर सके। ज्योतिरादित्य सिंधिया वर्ष 2019 के आम चुनाव में बहुत जोश में थे और वह सक्रिय राजनीति में उतरी प्रियंका गांधी के साथ एक टीम बनाकर उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को फिर से खड़ा करने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन कांग्रेस के लिए उत्तर प्रदेश का नतीजा बहुत ही निराशाजनक रहा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली। ज्योतिरादित्य पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ही कांग्रेस प्रभारी थे।

ज्योतिरादित्य को यह महसूस होने लगा था कि राहुल और सोनिया गांधी कांग्रेस को बदलने में असमर्थ हैं और पार्टी में सब कुछ ऐसे ही चलता रहेगा। वह इस नतीजे पर भी पहुंचे कि युवाओं को कांग्रेस में अपनी जो जगह बनानी है, वह आने वाले समय में नहीं बनने वाली और कांग्रेस भी भारतीय राजनीति में अपनी सही जगह बनाने में असमर्थ है। अपनी इसी सोच के चलते उन्होंने कांग्रेस से अलग होने का निर्णय लिया। उनके साथ उनके समर्थक माने जाने वाले कई विधायक भी कांग्रेस छोड़ने को तैयार हैं। इन विधायकों के कांग्रेस छोड़ने के कारण ही कमलनाथ सरकार संकट में है। ज्योतिरादित्य सिंधिया अपनी दादी राजमाता विजयाराजे सिंधिया को अपना रोल मॉडल मानते रहे हैं।

नमस्ते ट्रम्प

मोटेरा स्टेडियम में बोले डोनाल्ड ट्रंप- आतंकवाद की लड़ाई मिलकर लड़ेंगे भारत और अमेरिका

“ अहमदाबाद के मोटेरा स्टेडियम में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का संबोधन कई मामलों में खास था। उन्होंने न सिर्फ इस देश की एकता, संस्कृति और विरासत को याद किया, बल्कि भारत के साथ अमेरिका की बढ़ती नजदीकियों की भी चर्चा की। उन्होंने अपनी प्राथमिकता भी खूब गिनाई; फिर चाहे वह आपस में मिलकर इस्लामी आतंकवाद से मुकाबला करना हो, या सैन्य क्षेत्र में काम करना या फिर अंतरिक्ष-विज्ञान को गति देना। एक चाय वाले के सत्ता के शिखर पर पहुंचने को उन्होंने यहां के लोकतंत्र की ताकत बताया। दोनों देशों के शासनाध्यक्षों की मित्रता कितनी अनूठी है, इसका पता तो ट्रंप के भारत दौरे से पहले ही चल गया था। उन्होंने यहां आने से पूर्व कहा था कि कारोबार के क्षेत्र में अच्छा बर्ताव न करने के कारण भारत के साथ समझौता करना मुश्किल है, मगर प्रधानमंत्री मोदी मेरे अच्छे दोस्त हैं।

अन्जू भरमोरिया

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच करीब तीन अरब डॉलर के रक्षा समझौतों पर सहमति बनी और तीन समझौता पत्रों पर भी हस्ताक्षर किए गए। इन समझौतों से एक दिन पहले ट्रम्प ने अहमदाबाद में अपने भाषण में कहा था कि आज के बाद से अमेरिका में भारतीयों के लिए निश्चित तौर पर प्यार बढ़ेगा। इन्हीं वजहों से भविष्य में दोनों देशों के आपसी संबंधों में और गर्माहट आने की उम्मीदें बढ़ी हैं। ट्रंप के भारत दौरे के बाद भारत-अमेरिकी रिश्तों की डोर कितनी मजबूत होगी, दावे के साथ इसकी भविष्यवाणी करना अभी जल्दबाजी ही होगी। दरअसल ट्रंप का इस यात्रा से पहले तक का भारत के प्रति व्यवहार देखें तो साफतौर पर दिखाई देता रहा है कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अमेरिका भारत का सच्चा दोस्त नहीं रहा बल्कि आर्थिक लाभ उसे भारत के करीब खींच लाता है। अमेरिका का रक्षा बाजार बहुत बड़ा है, वह आधुनिकतम तकनीक से निर्मित खतरनाक से खतरनाक साजो-सामान का निर्माण करता है, जिन्हें बेचने के लिए उसे भारत जैसे बड़े बाजार की जरूरत रहती है। आंकड़े देखें तो भारत का रूस से हथियार आयात 2008 से 2013 के बीच करीब 78 फीसदी था, जो 2013 से 2018 के बीच घटकर 58 फीसदी रह गया जबकि अमेरिका से यह आयात 2013 से 2018 के बीच करीब 569 फीसदी बढ़ा है। ट्रंप यात्रा को भारत-अमेरिकी संबंधों का नया अध्याय बताते हुए प्रधानमंत्री ने साफतौर पर कहा है कि दोनों के रिश्ते नई ऊंचाईयों पर पहुंचे हैं और दो देशों के संबंधों का सबसे बड़ा आधार विश्वास होता है। आने वाले दिनों में ही इस बात का खुलासा होगा कि ट्रंप ने अपनी भारत यात्रा के दौरान भारत के प्रति दोस्ती को लेकर जो कुछ कहा, उस पर वे कितना खरा उतरने की कोशिश करते हैं।

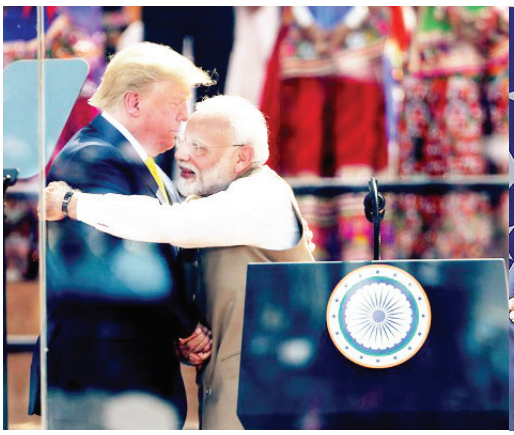

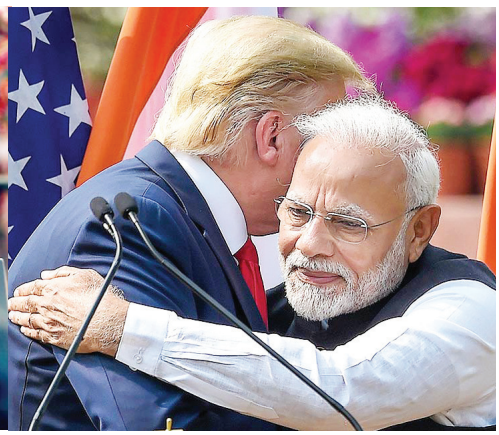

अमेरिका में इसी साल के अंत में राष्ट्रपति चुनाव होने हैं। वहां करीब चालीस लाख भारतीय बसे हैं, जिनकी आज के समय में वहां काफी प्रभावशाली भूमिका है। इसीलिए कुछ लोगों ने भले ही ट्रम्प के इस दौरे को अमेरिका में बसे भारतीयों को साधने के लिए महज ट्रम्प के राजनीतिक फायदे वाला दौरा करार दिया हो लेकिन ट्रम्प की यात्रा के सभी पहलुओं पर गौर करें तो ट्रम्प और मोदी के घनिष्ठ होते संबंधों को देखते हुए माना जाना चाहिए कि इस यात्रा के बाद भारत-अमेरिका संबंधों को नई ऊंचाई मिलेगी। दो देशों के

आपसी संबंध उन दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्षों के आपसी संबंधों पर भी निर्भर करते हैं और ट्रम्प कुछ माह पहले अमेरिका के ह्यूस्टन शहर में आयोजित कार्यक्रम 'हाउडी मोदी' से लेकर अब तक जिस प्रकार मोदी की प्रशंसा करते रहे हैं, उससे दोनों के आपसी संबंधों को मजबूती मिली है।

उम्मीद की जानी चाहिए कि दोनों के मजबूत होते इन्हीं आपसी संबंधों से दोनों राष्ट्रों के आपसी संबंध भविष्य में और मजबूत होंगे। दोनों के बीच कुछ समय से जिस तरह का तालमेल दिखाई दे रहा है, उससे भारत-अमेरिका संबंधों को नया आयाम मिलना तय माना जा रहा है। सही मायनों में ट्रम्प की यात्रा ने भारत के साथ भारतीयों की बढ़ती ताकत का भी स्पष्ट अहसास कराया है।

ट्रम्प के मोदी को कठिन वार्ताकार कहे जाने का बिल्कुल सीधा अर्थ है कि एक ओर जहां अमेरिका अपने फायदे वाले कुछ बड़े सौदों पर भारत से वार्ता कर रहा है, वहीं भारत अपने हित साधने के लिए अपनी जिद पर अड़ा रहा है। भले ही तीन अरब डॉलर के रक्षा समझौतों पर सहमति के अलावा ट्रम्प की भारत यात्रा का ज्यादा कारोबारी महत्व नहीं रहा हो लेकिन इससे एक बात तो स्पष्ट हुई ही है कि भारत अब अपने व्यापारिक हितों की अनदेखी नहीं करता है। दरअसल ट्रम्प कई बार कह चुके हैं कि भारत कई वर्षों से अमेरिकी व्यापार को प्रभावित कर रहा है। भारत के संबंध में वे कह चुके हैं कि वे हम पर शुल्क लगाते हैं और भारत में यह दुनिया की सबसे अधिक दरों में से एक है। ट्रम्प के कुछ कठोर कदमों से भारत को भी बड़ा झटका लग चुका है। हालांकि तमाम गतिरोधों के बावजूद दोनों देशों के बीच पिछले दो वर्षों में व्यापार करीब 10 फीसदी वार्षिक दर से बढ़ा है और अमेरिका का लाभ लेने के मामले में भारत अब चीन से आगे निकल रहा है।

भारत यात्रा के दौरान ट्रम्प ने कहा था कि अमेरिका भारत को प्रेम करता है, भारत का दोस्त है, उसका सम्मान करता है और अमेरिका के लोग सदैव भारत के लोगों के सच्चे और निष्ठावान दोस्त रहेंगे। उन्होंने अपने भाषण में पाकिस्तान का नाम लेते हुए यह भी कहा कि पाकिस्तान को आतंकवाद पर लगाम लगानी ही होगी और आतंकवाद के खिलाफ भारत-अमेरिका साथ-साथ लड़ाई जारी रखेंगे। आतंकवाद को लेकर उन्होंने भारत के साथ मिलकर लड़ने की बात दोहराई तो यह मानने से गुरेज नहीं होना चाहिए कि मित्र देशों

की सूची में अमेरिका अब भारत को खास महत्व दे रहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि ट्रम्प की भारत यात्रा के बाद ये रिश्ते नए सिरे से परवान चढ़ेंगे। बदलते दौर में अमेरिकी नीति में भारत का महत्व काफी बढ़ा है। राष्ट्रपति रहते बराक ओबामा ने दो बार भारत के दौरे किए और अब जिस प्रकार ट्रम्प ने भारत आकर भारत की महत्ता को स्वीकारा, उससे इसका स्पष्ट आभास भी हो जाता है।

दोनों देशों के बीच घनिष्ठ होते संबंध अंतराष्ट्रीय स्तर पर चीन को महाशक्ति बनने से रोकने में मददगार साबित होंगे। इसके अलावा भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के मामले में भी अमेरिका का साथ मिल सकता है। हालांकि अमेरिका अभी तक भारत के परम्परागत दोस्त के बजाय पेशेवर दोस्त की भूमिका में ही नजर आया है। ट्रंप ने जिस प्रकार अपने भाषण में भारत को ज्ञान की धरती और भारतीय संस्कृति को महान बताते हुए गंगा, जामा मस्जिद व मंदिरों सहित भारतीय धरोहरों तथा स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी का उल्लेख किया और होली-दीवाली जैसे त्योहारों का जिक्र करना भी नहीं भूले, साथ ही यह भी स्वीकार किया कि अमेरिका में भारतीय मूल के लोगों ने वहां के विकास में बड़ा किरदार निभाया है, उससे दोनों देशों के आपसी रिश्ते मजबूत होने की संभावनाएं प्रबल हुई हैं।

एनपीआर के लिए दस्तावेज की जरूरत नहीं, किसी को नहीं बताया जाएगा संदिग्धः अमित शाह

राज्यसभा में दिल्ली दंगों पर चर्चा के दौरान गृह मंत्री अमित शाह ने साफ किया कि नेशनल पॉपुलेशन रजिस्टर (एनपीआर) के लिए किसी नागरिक को दस्तावेज नहीं दिखाना होगा। साथ ही किसी नागरिक को संदिग्ध की श्रेणी में नहीं रखा जाएगा। पिछले दिनों दिल्ली की कानून व्यवस्था की स्थिति पर राज्यसभा में हुई चर्चा का जवाब देते हुए शाह ने यह भी आश्वासन दिया कि राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) में किसी से कोई भी अतिरिक्त दस्तावेज नहीं मांगा जाएगा। इसके अलावा, किसी व्यक्ति के पास उपलब्ध कोई भी जानकारी उपलब्ध कराना अनिवार्य नहीं है। नफरत फैलाने वाले भाषणों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सीएए कानून बनने के बाद से ही अल्पसंख्यकों विशेषकर मुसलमानों के मन में एक भय बैठाने का प्रयास किया गया। शाह ने विपक्षी नेताओं से पूछा कि सीएए की एक भी ऐसी धारा बता दें, जिसमें नागरिकता लेने की बात कही गयी है।

सिब्बल पर किया पलटवार

शाह ने कांग्रेस नेता सिब्बल से पूछा कि वह ''संशोधित नागरिकता कानून में ऐसी कोई धारा बता दें जिससे मुसलमानों की नागरिकता चली जाएगी। ''सिब्बल द्वारा इसके जवाब में एनपीआर का उल्लेख करने पर शाह ने कहा कि उन्होंने विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि एनपीआर में कोई दस्तावेज नहीं मांगा गया है। उन्होंने कहा, ''देश में किसी को एनपीआर की प्रक्रिया से डरने की जरूरत नहीं है।''

''डी'' एवं एनपीआर को लेकर कोई संदेह है तो चर्चा के लिए तैयार

गृह मंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि ''डी'' एवं एनपीआर को लेकर यदि कोई संदेह है तो नेता प्रतिपक्ष गुलाम नबी आजाद, गृह संबंधी संसद की स्थायी समिति के अध्यक्ष आनंद शर्मा एवं जो भी सांसद चाहें, आकर उनसे चर्चा कर सकते हैं। वह उनके संदेह दूर करेंगे। उन्होंने कहा कि एनपीआर और सीएए को लेकर सारे भ्रम को दूर करने का समय आ गया है।

एनपीआर में ''डी (संदिग्ध प्रविष्टि)'' नहीं होगा?

आजाद ने गृह मंत्री से पूछा कि क्या उनकी बात का आशय यह है कि एनपीआर में ''डी (संदिग्ध प्रविष्टि)'' नहीं होगा? इस पर शाह ने सिर हिलाते हुए कहा कि उनका यही आशय है। किंतु इसी बीच विपक्षी सदस्यों ने कुछ और सवाल पूछने शुरू कर दिये जिसके कारण शाह अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाये। शाह ने यह भी स्पष्ट किया कि एनपीआर में किसी से कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं मांगी जाएगी।

राजनीतिक भविष्य के लिए विचारधारा को छोड़ा, जल्द होगा अहसासः राहुल

ज्योतिरादित्य सिंधिया के भाजपा में शामिल होने को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को कहा कि वे अपने राजनीतिक भविष्य को लेकर चिंतित थे, इसलिए अपनी विचारधारा को त्याग कर आरएसएस के साथ चले गए। वास्तविकता यह है कि उन्हें वहां (भाजपा) सम्मान नहीं मिलेगा और जल्द ही इसका अहसास होगा। राहुल गांधी ने कहा कि यह विचारधारा की लड़ाई है, एक तरफ कांग्रेस और दूसरी तरफ भाजपा-आरएसएस है। मैं ज्योतिरादित्य सिंधिया की विचारधारा को जानता हूं, वह कॉलेज में मेरे साथ थे, मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूं। वह अपने राजनीतिक भविष्य के बारे में चिंतित थे और वह आरएसएस के साथ चले गए। जल्द ही उन्हें इसका एहसास होगा, मुझे पता है क्योंकि मैं उनके साथ लंबे समय से दोस्त हूं। उसके दिल में कुछ और है और जुबान पर

कुछ ओर है। राहुल गांधी से यह पूछे जाने पर कि वह अपनी मुख्य टीम के सदस्यों को राज्यसभा क्यों नहीं भेज रहे हैं, इस पर उन्होंने कहा कि मैं कांग्रेस अध्यक्ष नहीं हूं, मैं राज्यसभा प्रत्याशियों पर निर्णय नहीं ले रहा हूं। मैं देश के युवाओं को अर्थव्यवस्था के बारे में बता रहा हूं। मेरी टीम में कौन है, मेरी टीम में कौन नहीं है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस दौरान कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने देश के आर्थिक हालत को लेकर भी मोदी सरकार पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था की स्थिति को हर कोई देख सकता है। भारत की ताकत उसकी अर्थव्यवस्था थी, नरेंद्र मोदी की विचारधारा और नीतियों ने इसे नष्ट कर दिया। उन्होंने कहा कि कोरोना वायरस की समस्या बहुत गंभीर है लेकिन सरकार ने उस तरह से कार्रवाई नहीं की है जैसी होनी चाहिए थी।

हिंसा की आग में जली दिल्ली

दिल्ली में हुई हिंसा देश के लिए दुखद है। सीएए और एनपीआर का विरोध या समर्थन किया जाना एक राजनीतिक मुद्दा हो सकता है, पर भीड़ द्वारा की गई एक भी हिंसा हमारी सामाजिक चेतना पर प्रश्न उठाती है। जब भी इस तरह की घटनाएं होती हैं, सरकार द्वारा उन पर किसी तरह नियंत्रण कर लिया जाता है, लेकिन इनको रोकने के लिए दीर्घकालीन उपाय नहीं अपनाए जाते, ताकि इनकी पुनरावृत्ति न हो। अलग-अलग वर्गों के बीच वैचारिक मतभेद और विमर्श स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान हैं, लेकिन यह वैचारिक मतभेद हिंसक नहीं होना चाहिए। अलग-अलग मुद्दों पर हमारे मतभेद हो सकते हैं, पर इसी से प्रगतिशील समाज का भी निर्माण होता है। कानून के शासन में हिंसा की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। दिल्ली हिंसा में कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ आगजनी से लोगों के आशियाने उजड़ गए दिल्ली हिंसा के बाद आज कई ऐसे सवाल हैं जिसके जवाब दिल्ली पूछ रही है कि आखिर दिल्ली का गुनहगार कौन है।

दिल्ली हिंसा में सबसे शर्मनाक और निराशाजनक बात हुई है, वह यह है कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में दिल्ली पुलिस अपनी जिम्मेदारियों को संभालने में बिल्कुल विफल रही है. पुलिस की भूमिका केवल कानून-व्यवस्था बहाल करने तक ही सीमित नहीं होती है, बल्कि उसके ऊपर शांति बनाये रखने की जवाबदेही भी होती है, उसे लोगों की सुरक्षा को भी सुनिश्चित करना होता है तथा कहीं स्थिति खराब न हो, इसका भी ख्याल रखना पड़ता है. दिल्ली देश के करोड़ों लोगों, जिनका हवाला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बार-बार देते रहते हैं, दिल्ली पुलिस बहुत प्रशिक्षित और संसाधन-संपन्न सुरक्षा बल है. इस पर हमें गर्व होता था. ऐसे पुलिस बल की दिल्ली हिंसा के दौरान बहुत शर्मनाक भूमिका रही है. पुलिस अधिकारियों व पुलिसकर्मियों के सामने फसाद होता रहा, आगजनी होती रही और लोगों की जानें गयीं, पर ये सभी हाथ बांधे खड़े रहे. इसे माफ नहीं किया जा सकता है और इस पूरे मामले में सबसे पहले यह जांच होनी चाहिए कि ऐसा क्यों हुआ. इस पर आत्ममंथन किया जाना चाहिए. यदि देश की राजधानी में ही लोग सुरक्षित नहीं महसूस करेंगे, तो फिर गांवों, कस्बों और अन्य शहरों के वासियों में ऐसी भावना कहां से आयेगी! केंद्र

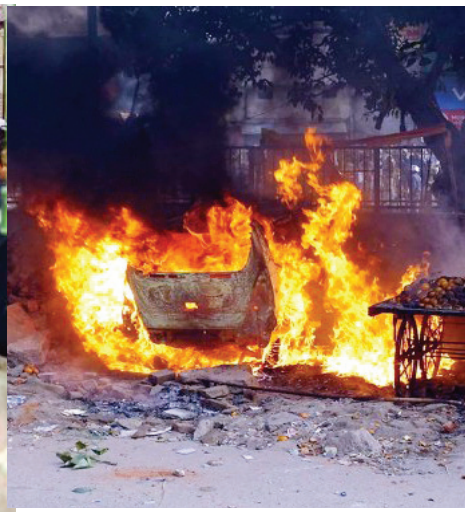

सरकार द्वारा ऐसी घटना का अनुमान न लगा पाना और समय रहते कार्रवाई न कर पाना अफसोसनाक है. आम आदमी पार्टी की राज्य सरकार के रवैये पर भी सवाल उठाया जाना चाहिए, जिसे कुछ दिन पहले ही दोबारा बहुत बड़ा जनादेश मिला है. मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बयान दिया कि हिंसा रुकनी चाहिए और इससे किसी को भी फायदा नहीं होगा.

दिल्ली के हालातों का जायजा दिल्ली पुलिस के नवनियुक्त कमिश्नर के साथ-साथ देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने भी लिया। दिल्ली हिंसा पर देश के गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों के साथ कई दौर की बैठकें भी कीं। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी दिल्ली हिंसा के पूरे मामले की विस्तृत रिपोर्ट दी गई है। दिल्ली में बैठे तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं ने हिंसा के वीभत्स दौर को देखा। दिल्ली उच्च न्यायालय से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक, देश की अदालतों ने दिल्ली के हालात पर गंभीर चिंता जताई। मीडिया ने बहुत करीब से दंगों की आंच को झेला।

हिंसा के बाद दिल्ली के कुछ इलाकों में दंगे की स्थिति न केवल राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, बल्कि पूरे देश के लिए शर्म और दुख का विषय है। शर्म इसलिए कि कानून-व्यवस्था सीधे केंद्र सरकार के अधीन रहते हुए भी हालात बिगड़े हैं और दुख इसलिए कि खून-खराबे के खतरनाक नतीजों को बार-बार समझने-समझाने के बावजूद समाज में एक ऐसा तबका है, जो हिंसा से उम्मीदें पाले बैठा है। राष्ट्रीय राजधानी में कौन हैं ये लोग, जो गरीबी में भी आटा गीला करने की हैवानियत दिखा रहे हैं? संघर्ष-आंदोलन-प्रदर्शन लोकतंत्र की ताकत है, लेकिन हिंसा एक ऐसी कमी है, जहां पहुंचकर समाज की सारी अच्छाइयां घुटने टेक देती हैं। जिन इलाकों में ये दंगे हुए हैं, उनके तमाम प्रतिनिधियों, गणमान्यों से सवाल पूछा जा सकता है कि आप कहां थे, कहां हैं? यही सवाल पुलिस से अदालत ने पूछा है, तो कोई आश्चर्य नहीं। दंगे की आंच पर कौन क्या पका रहा है और कौन क्या पकने दे रहा है, ये हमें जरूर देखना चाहिए।

दुनिया के 30 सबसे प्रदूषित शहरों में भारत के 21 शहर, दिल्ली सबसे प्रदूषित राजधानी

दुनिया में सबसे प्रदूषित राजधानी शहरों की लिस्ट में राजधानी दिल्ली शीर्ष स्थान पर है। एक नई रिपोर्ट से खुलासा हुआ है कि विश्व के 30 सबसे ज्यादा प्रदूषित शहरों में 21 भारत के हैं। आईक्यूएयर एयर विजुअल द्वारा तैयार 2019 की विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में गाजियाबाद सबसे प्रदूषित शहर है। इसके बाद चीन में होतन, पाकिस्तान में गुजरांवाला और फैसलाबाद और फिर दिल्ली का नाम है।

शैलेष सिंह कुशवाह वरिष्ठ पत्रकार

विश्व के 30 सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में शुमार 21 भारतीय शहरों में क्रम से गाजियाबाद, दिल्ली, नोएडा, गुरुग्राम, ग्रेटर नोएडा, बंधवारी, लखनऊ, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर, बागपत, जींद, फरीदाबाद, कोरोत, भिवाड़ी, पटना, पलवल, मुजफ्फरपुर, हिसार, कुटेल, जोधपुर और मुरादाबाद हैं। देशों के आधार पर आंकड़ों के मुताबिक, सूची में बांग्लादेश शीर्ष पर, इसके बाद पाकिस्तान, मंगोलिया और अफगानिस्तान और पांचवें नंबर पर भारत है। हालांकि, रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय शहरों ने पिछले वर्षों में सुधार किया है।

आईक्यूएयर के सीईओ फ्रैंक हेम्स ने कहा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोरोना वायरस सुर्खियों में है लेकिन वायु प्रदूषण हर साल 70 लाख से ज्यादा लोगों की जान ले रहा है। दुनिया के बड़े हिस्से में वायु गुणवत्ता आंकड़े में अंतर एक गंभीर समस्या है क्योंकि जिसे नहीं मापा जाता है उसे प्रबंधित नहीं किया जा सकता है।% उन्होंने कहा कि जिन इलाकों में वायु गुणवत्ता की जानकारी नहीं है, वहां दुनिया का सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण होने की आशंका है, ऐसे में बड़ी आबादी को खतरा है। वैश्विक स्तर पर निगरानी आंकड़ा बढ़ने से नागरिकों को सशक्त करने का मौका मिलेगा और सरकार वायु गुणवत्ता बेहतर करने के लिए बेहतर नीतिगत फैसला ले सकेगी।

जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल अभी भी बहुत है

रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए ग्रीनपीस इंडिया में सीनियर कैंपेनर अविनाश चंचल ने कहा कि प्रदूषण को नियंत्रित किए जाने के लिए उठाए जाने वाले कदम पर्याप्त नहीं हैं। उन्होंने कहा कि नयी रिपोर्ट और पिछले साल जारी रिपोर्ट से उन रूझानों का पता चलता है कि घरेलू और कृषि स्तर पर जैव ईंधन का प्रयोग घटा है लेकिन जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल अभी भी बहुत है।

किस आधार पर तैयार होती है रिपोर्ट?

ग्लोबल एयर क्वॉलिटी इन्फोर्मेशन कंपनी आईक्यूएआईआर के रिसर्चरों ने ग्राउंड मॉनिटरिंग स्टेशन के जरिए मिले पीएम2.5के डेटा के आधार पर यह रिपोर्ट तैयार की है। पीएम2.5 वायु में घुले बेहद ही छोटे कण होते हैं, जिन्हे सिर्फ माइक्रोस्कोप की मदद से देखा जा सकता है। सांस लेने के दौरान ये कण आसानी से फेफड़ों तक पहुंच जाते हैं, जो बेहद नुकसानदायक है। ये आगे चलकर फेफड़ों और ह्रदय से जुड़ी बीमारियों के कारण बनते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की 2018 की एक रिपोर्ट के मुताबिक, दुनियाभर में हर साल 15 साल से कम उम्र के 6 लाख बच्चों की मौत सिर्फ प्रदूषण से होने वाली बीमारियों के कारण होती है। वर्ल्ड बैंक की 2016 की एक रिपोर्ट के मुताबिक, वायु प्रदुषण के कारण होने वाली बच्चों की मौतों से हर साल दुनियाभर में 5 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान होता है।

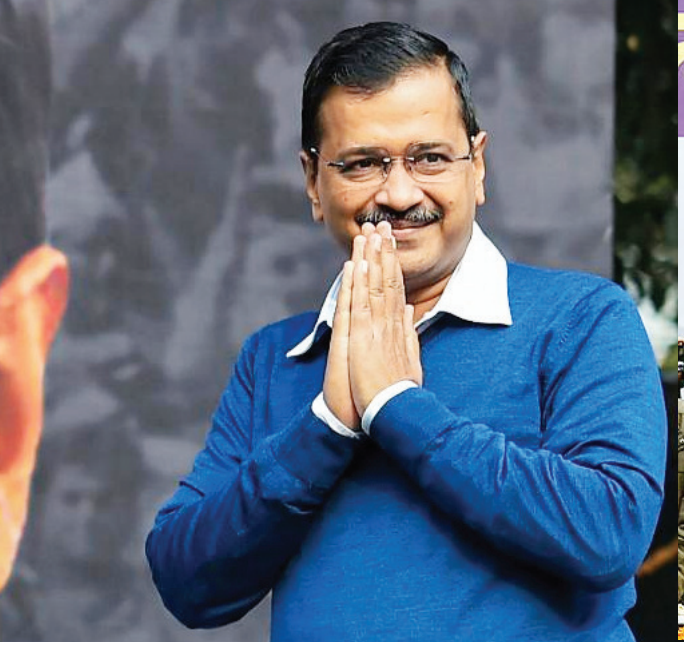

दिल्ली के बाद आप का मिशन यूपी

दिल्ली में सियासी पकड़ दिखाकर सत्ता की हैट्रिक लगाने से उत्साहित आम आदमी पार्टी अब उत्तर प्रदेश में राजनीतिक बिसात बिछाने की रणनीति पर तेजी से आगे बढ़ रही है। पार्टी का प्लान यूपी के 2022 के विधानसभा चुनाव में दमदार दस्तक देने का है। केजरीवाल के 12 योद्धा इस काम को आसान बनाएंगे।

पंकज त्रिपाठी

आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में हैट्रिक लगाई है दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने साबित कर दिया कि बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली और पानी के विकासवादी एजेंडा और अलग तरह की राजनीति में इतनी धार है कि वे भाजपा के हाई वोल्टेज प्रचार के बावजूद मतदाताओं को अपने साथ जोड़े रख सकते हैं। भाजपा राष्ट्रवाद और सीएए-एनआरसी विरोध को मुद्दा बनाकर कोई खास कमाल कर पाने में नाकामयाब रही। हालांकि उसकी सीटों में कुछ बढ़ोतरी जरूर हुई है। दिल्ली के चुनाव के साथ ही कुछ समय बाद इसका शोर भले ही शांत हो जाए लेकिन आप द्वारा उठाए गए आम लोगों के जीवन पर बड़ा प्रभाव डालने वाले मुद्दे का असर देश की राजनीति पर आगे दिखाई देगा। चुनाव प्रचार के दौरान केजरीवाल कहते थे कि भाजपा के प्रचार के लिए आने वाले दूसरे राज्यों के नेताओं और मुख्यमंत्रियों से उनके राज्य में बिजली के दरों के पूछना चाहिए। देश के तमाम राज्यों में कभी भी बदहाल शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं मुद्दा नहीं बन पाई लेकिन दिल्ली के बाद दूसरे राज्यों में मतदाता इन मुद्दों पर ध्यान देने वाली पार्टियों को पसंद करेंगे। बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य के मुद्दे गरीब मतदाताओं को ही नहीं, बल्कि मध्यम वर्ग को भी प्रभावित करते हैं। अगर सरकार की ओर से ये सेवाएं बेहतर क्वालिटी में मिलती हैं तो प्राइवेट स्कूल और अस्पतालों की ओर आम जनता को रुख नहीं करना पड़ेगा, इससे निश्चित ही उन्हें बचत होगी और जीवन स्तर सुधरेगा। आप ने कहा कि चुनाव नतीजों पर ट्वीट करके कहा कि यह जीत दिल्ली की जीत है क्योंकि यहां अच्छे सरकारी स्कूल और मोहल्ला क्लीनिक हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव

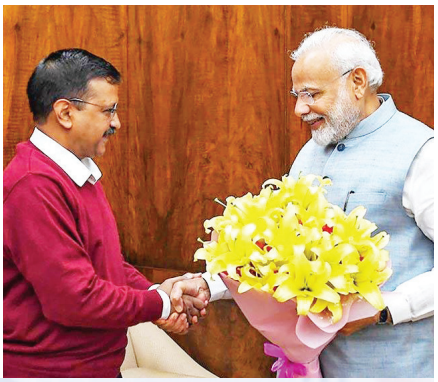

ठाकरे इन मुद्दों के लिए केजरीवाल की तारीफ करके केंद्र सरकार को आईना दिखा चुके हैं।

यूपी में पकड़ की कवायद

आम आदमी पार्टी हालांकि दिल्ली के बाहर भी पैर पसारने को खुद के वजूद में आने के बाद से ही बेताब है। पार्टी यूपी में 2014 के लोकसभा चुनाव में भी चुनिंदा सीटों पर चुनाव लड़ी थी। हालांकि जनता का प्यार अपेक्षा के मुताबिक नहीं मिल पाया था। अब दिल्ली में जनता के मिले अपार प्यार को देख पार्टी ने अपने विस्तार की रणनीति तैयार की है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक दिल्ली में यूपी के लोग बड़ी तादाद में रहते हैं। उनका रुझान पार्टी की तरफ रहने से थिंक टैंक मान रहा है कि उत्तर प्रदेश में मजबूत सियासी पारी खेलने से वहां भी ऐसा ही प्यार मिल सकता है।

यूपी के बेटे बता जुड़ने की होगी कोशिश

पार्टी के दिल्ली में चुने गए 62 विधायकों में से 12 यूपी की पृष्ठभूमि के हैं। इनमें अमानतउल्लाह खान मेरठ, मनीष सिसौदिया पिलखुआ-हापुड़, इमरान हुसैन और कुलदीप मोनू गाजियाबाद, सतेंद्र जैन बागपत, रोहित मेहरोलिया बुलंदशहर, राजेश ऋषि, गिरीश सोनी और दिनेश मोहनिया आगरा, गोपाल राय मऊ, दिलीप पांडेय गाजीपुर, अखिलेश पति त्रिपाठी बस्ती, प्रीती तोमर मैनपुरी आदि शामिल हैं। आम आदमी पार्टी का प्लान है कि इन 12 विधायकों के सहारे यूपी की जनता को लुभाया जाए। इन विधायकों को यूपी के बेटे के तौर पर पेश कर जनता का साथ हासिल किया जाए। 2022 के विधानसभा चुनाव में हर सीट पर कैंडिडेट उतारकर अपनी ताकत दिखाई जाए। जातिवादी राजनीति के खिलाफ बिगुल फूंका जाए।

प्रधानमंत्री ने प्रयागराज में 27 हजार दिव्यांग उपकरण बांटे, चित्रकूट में बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे की नींव भी रखी

सरकार का दायित्व है कि सबका विकास हो

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उत्तर प्रदेश के दो जिलों के दौरे पर हैं। सबसे पहले उन्होंने प्रयागराज में होने वाले दिव्यांग महाकुंभ में प्रधानमंत्री एक साथ 26,791 दिव्यांगों और बुजुर्गों को उपकरण बांटे। इसके बाद प्रधानमंत्री चित्रकूट पहुंचे, वहां 297 किमी लंबे बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे का शिलान्यास किया। उन्होंने चित्रकूट से ही पूरे देश में 10,000 किसान उत्पादक संगठन की शुरुआत भी की। लोकसभा चुनाव के बाद दोनों जिलों में मोदी का यह पहला दौरा है।'इसी सोच के साथ हमारी सरकार समाज के हर व्यक्ति के विकास के लिए उसके जीवन को आसान बनाने के लिए काम कर रही है। चाहे वह वरिष्ठजन हों या दिव्यांगों या फिर आदिवासी। सभी भारतीयों की सेवा करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। विशेषकर दिव्यांगों की तकलीफों को सरकार ने समझा है। सरकार संवेदनशीलता से काम कर रही है।'

'हमारी सरकार ने दिव्यांगों की नियुक्ति के लिए एक अभियान चलाया है। आरक्षण 3त्न से बढ़ाकर अब 4त्न कर दिया है। कौशल विकास भी हमारी प्राथमिकता रही है। सरकार ने 2 लाख दिव्यांगों को स्किल ट्रेनिंग देने का काम किया है। 5 लाख लोगों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य रखा गया है। दिव्यांगों से जुड़े खेलों में दिव्यांगों ने भारत का नाम रोशन किया है।'

'हमारी सरकार ने दिव्यांगों के लिए जिस सेवा भाव से काम किया है, उसकी जितनी चर्चा होनी चाहिए थी उतना नहीं हो पाई। सामान्यजनों के अधिकारों की रक्षा के लिए लोग काम करते हैं। पहले दिव्यांगों की 7 अलग-अलग तरह की कैटगरी होती थी उसे बढ़ाकर 21 तक कर दिया गया। हमने इसका दायरा बढ़ा दिया है।'

'दिव्यांगों की तकलीफ-समस्या जिस गंभीरता से सुनी जानी चाहिए थी, उस पर ध्यान नहीं दिया गया। दिव्यांगों के लिए जब मन में कुछ करने की पीड़ा होती है, तब कुछ काम होता है। देशभर की सरकारी इमारतों को दिव्यांगों के लिए सुगम्य बनाने के लिए जो नई इमारतें और रेलवे कोच बन रहे हैं, उन्हें दिव्यांगों को ध्यान में रखकर बनाया जा रहा है।'

'एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने पर अलग-अलग भाषा होने पर दिव्यांगों को बहुत दिक्कत होती है। दिव्यांगों के लिए भी एक कॉमन लैंग्वेज हो, इसका प्रयास भी हमारी सरकार ने शुरू किया। इसके लिए सरकार ने इंडियन साइंस लैंग्वेज एंड रिसर्च सेंटर की स्थापना की है। साइन के तहत भाषण को बताने का प्रयास किया जा रहा है।' 'आयुष्मान भारत योजना की तहत गरीबों और दिव्यांगजनों को इसका लाभ मिल रहा है। गरीब से गरीब देशवासी भी बीमा की सुविधा से जुड़ें इसके लिए 2-2 लाख रुपए की बीमा की योजनाएं चल रही हैं। अभी तक 24 करोड़ से अधिक लोग इस योजना से जुड़ चुके हैं। अब तक लगभग 4 हजार करोड़ रुपए के क्लेम भी लोग कर चुके हैं।'

यस बैंक संकटः बैंकिंग सिस्टम पर सवाल

“ यस बैंक के परेशानी में फंसने से इसके जमाकर्ताओं में हड़कंप मच गया है। बदहवास हालत में वे बैंक के एटीएम पर पहुंच रहे हैं, लेकिन पैसे निकल नहीं रहे। शाखाओं में खलबली मची है, वहां भी न पैसे दिए जा रहे हैं, न कोई दूसरी गतिविधि हो रही है। ग्राहकों को अपने पैसे डूबने की आशंका सता रही है। शेयर बाजार पर इस घटना का बहुत बुरा असर पड़ा है।

लोगों के जेहन में कुछ ही समय पहले दिवालिया हुए पीएमसी बैंक की याद ताजा हो गई है। उसके ग्राहकों ने पैसे पाने के लिए प्रदर्शन किया था, जिसमें एक व्यक्ति की मौत तक हो गई थी। वैसे रिजर्व बैंक और सरकार इस बार सचेत हैं कि हालात उतने न बिगड़ें। रिजर्व बैंक ने यस बैंक के बोर्ड का संचालन अपने हाथों में लेते हुए इससे महीने में 50 हजार रुपये तक की निकासी सीमा बांध दी है, जबकि सरकार ने भारतीय स्टेट बैंक और अन्य वित्तीय संस्थानों को यस बैंक को खरीद लेने की दिशा में आगे बढ़ने की मंजूरी दे दी है। इधर तीन-चार वर्षों से यस बैंक की वित्तीय सेहत लगातार बिगड़ रही थी। बैंक ने जिन कंपनियों को लोन दिया उनमें अधिकतर घाटे में हैं या दिवालिया हो चुकी हैं। पैसे वापस लौटने का सिलसिला टूटा तो बैंक का हाल बिगड़ने लगा।

नुकसान से बचने के लिए उसने पूंजी जुटाने की कोशिश की। इससे उसकी रेटिंग खराब हुई और निवेशकों, जमाकर्ताओं ने अपना पैसा निकालना शुरू कर दिया। बैंक प्रबंधन अपना घाटा छिपाता रहा। वित्त वर्ष 2018-19 में यस बैंक ने करीब 3,277 करोड़ रुपये के एनपीए को अपने खाते में दिखाया ही नहीं। रिजर्व बैंक को उसने इस झांसे में रखा कि बैंक को जल्द ही बड़े पैमाने पर निवेश मिलने जा रहा है। लेकिन मैनेजमेंट के पास निवेश के लिए कोई ठोस प्रस्ताव नहीं था। हाल तो अभी भारत के समूचे बैंकिंग सेक्टर का ही बुरा है। ज्यादातर सरकारी बैंक खस्ताहाल हैं। कुछ बड़े नॉन बैंकिंग फिनांशल इंस्टीट्यूशन एक झटके में डूब गए। यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए भारी चिंता का विषय है।

बैंकिंग क्षेत्र का बेपरदा होता संकट

समस्या की जड़ कुछ हद तक उद्योग और व्यापार की सुस्ती से जुड़ी है, लेकिन कर्ज लेकर न लौटाने की बीमारी हमारे यहां बहुत पुरानी है। इस पर रोक तभी लगेगी जब बैंकों के कर्ज को घर की खेती समझने वालों में खौफ पैदा हो।

पिछले कुछ सालों में विकास को गति देने के नाम पर कई उद्यमियों को आंख मूंदकर कर्ज बांटे गए, जिनमें कई भगोड़े हो चुके हैं। इसके अलावा बैंकों ने कई योजनाओं के तहत भी अंधाधुंध ऋण बांटे हैं, जिनकी वापसी की कोई गारंटी नहीं है। अभी यस बैंक के ग्राहकों की जमापूंजी लौटाना सरकार का पहला फर्ज होना चाहिए ताकि उनका विश्वास सिस्टम में बना रहे। अगर आम आदमी का भरोसा अर्थतंत्र से उठ गया तो इसे बहाल करने में लंबा वक्त लगेगा।

वित्तीय संकट से जूझ रहे यस बैंक को उबारने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बेहद जरूरी प्रयास किए हैं। हालात संभालने के इस तरह के उपाय पहले भी किए जाते रहे हैं। 2003-04 में ही मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में कुछ बैंकों का विलय किया गया था। सेंचुरियन बैंक ऑफ पंजाब को भी आर्थिक राहत पहुंचाने के लिए एक दशक पहले एचडीएफसी बैंक के हवाले किया गया था। विलय या टेकओवर करके ही केंद्र सरकार और रिजर्व बैंक अब तक बैंकिंग क्षेत्र को दुरुस्त करते आए हैं। यह कोई नई परिपाटी नहीं है।

महिला दिवस पर हुआ नारी शक्ति का सम्मान

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने राष्ट्रपति भवन में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर नारी शक्ति पुरस्कार से विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय काम करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया। इसके साथ ही पीएम मोदी ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी और कहा हम अपनी नारी शक्ति की भावना

और उपलब्धियों को सलाम करते हैं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि जैसा कि मैंने कुछ दिन पहले कहा था कि मैं सोशल मीडिया अकाउंट बंद कर रहा हूं। सात महिलाएं अपनी जीवन से जुड़ी कहानियां साझा करेंगी और मेरे सोशल मीडिया अकाउंट से आप लोगों से साथ बातचीत करेंगी। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भारतीय वायुसेना की पहली महिला फाइटर पायलट मोहना जीतवाल, अवनी चतुर्वेदी , भावना कंठ, एथलेटिक्स में नाम रोशन करने वाली 103 साल की

मान कौर को और बिहार की बीना देवी को नारी शक्ति पुरस्कार प्रदान किया। बीना देवी को मशरूम की खेती में उल्लेखनीय काम करने के लिए यह पुरस्कार दिया। उनके मशरुम महिला के रूप में जाना जाता है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने अकाउंट से ट्वीट किया। उनके साइन ऑफ होने के बाद स्नेहा मोहन दास ने उनके ट्विटर अकाउंट की जिम्मेदारी संभाली और और कहा कि मैने अपनी मां से प्रेरित होकर बेघरों को खाना खिलाने की आदत डाली और फूडबैंक इंडिया नाम से यह पहल शुरू की। स्नेहा मोहन दास के बाद पीएम मोदी के ट्विटर अकाउंट की जिम्मेदारी मालविका अय्यर ने संभाली और अपनी कहानी के खास पहलूओं को बताया। सरकार ने ट्वीटर अकाउंट पर गृहिणी फाल्गुनी की कहानी शेयर की और बताया कि गृहिणी फाल्गुनी दोषी ने जरूरतमंदों के लिए व्हीलचेयर, वॉकर, अस्पताल के बेड, बैसाखी आदि उपकरणों की आसान पहुंच के लिए एक रास्ता निकाला और उन्हें प्रतिदिन कम से कम ऋ.1 से लेकर रु 5 तक के लिए किराए पर देने का काम प्रारंभ किया है।

पीएम मोदी के सोशल मीडिया को महिलाओं ने संभाला

पीएम नरेंद्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर देशभर की 7 महिलाओं को सम्मान देते हुए उन्हें अपने सोशल मीडिया अकाउंट को इस्तेमाल करने का अवसर दिया। इनमें कोई शिल्पकार है तो किसान, कोई जल संरक्षण की दिशा में काम कर रही हैं तो कोई गरीबों को मुफ्त में खाना खिला रही हैं। आइए जानते हैं इन महिलाओं के संघर्ष और उनकी सफलता की कहानी, उन्हीं की जुबानी जो उन्होंने पीएम मोदी के ट्विटर हैंडल पर शेयर की है। इनमें से कुछ महिलाएं वे भी हैं जिन्हें आज राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने नारी शक्ति सम्मान से सम्मानित किया है। अपनी मां से प्रेरित होकर स्नेहा मोहनदास ने फुडबैंक इंडिया नाम से पहल शुरू की है। गरीबों की भूख मिटाने के लिए वह भारत के बाहर के कई स्वयंसेवकों के साथ भी काम करती हैं। उन्होंने मोदी के ट्विटर अकाउंड पर लिखा, हमारी 20 से ज्यादा शाखाएं हैं और अपने काम से कई लोगों पर असर डाला है। हमनें सामूहिक रूप से भोजन पकाना, खाना पकाने का मैराथन और स्तनपान जागरुकता अभियान की पहल भी की।

महामारी बना कोरोना

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कोरोना वायरस को पैनडेमिक यानी महामारी घोषित कर दिया है। महामारी का नाम आधिकारिक रूप से उस बीमारी को दिया जाता है जो एक ही समय में दुनिया के अलग-अलग देशों में फैल रही हो। अब कोरोना वायरस के लिए महामारी शब्द का इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि वायरस को लेकर निष्क्रियता चिंताजनक है। इससे पहले साल 2009 में स्वाइन फ्लू को महामारी घोषित किया गया था। अनुमान है कि स्वाइन फ्लू की वजह से कई लाख लोग मारे गए थे। जहां तक कोरोना वायरस या कोविड 19 का प्रश्न है तो ताजा आंकड़ों के मुताबिक 114 देशों में अब तक 126,000 मामले सामने आए हैं। भारत में भी इसके मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है।

भारत ने इसके शुरुआती मामले सामने आने के साथ ही सतर्कता बरतनी शुरू कर दी थी और अब अपनी तैयारी और बढ़ा दी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बुधवार को एक अहम बैठक में कोरोना वायरस का संक्रमण रोकने के लिए 15 अप्रैल तक सभी वीजा पर पाबंदी लगाने का फैसला किया है। और तो और, ओसीआई कार्डधारकों (प्रवासी भारतीय नगरिकों) को दी जाने वाली वीजा मुक्त यात्रा की सुविधा पर भी 15 अप्रैल तक के लिए रोक लगा दी गई है। सरकार ने कहा है कि 15 फरवरी के बाद चीन, इटली, ईरान, कोरिया, फ्रांस, स्पेन और जर्मनी से भारत आए सभी यात्रियों को कम से कम 14 दिन तक अलग-थलग रखा जाएगा। इसमें वे भारतीय नागरिक भी शामिल होंगे जो इन देशों में घूमने गए थे। साथ ही सरकार ने सभी को हिदायत दी है कि

बेहद जरूरी न होने पर वे भारत न आएं।

सरकार का कहना है कि भारत आने पर उन्हें कम से कम 14 दिनों के क्वैरंटाइन में रहना पड़ सकता है। भारतीय नागरिकों से कहा गया है कि आवश्यक न होने पर वे विदेश न जाएं, क्योंकि उन्हें देश लौटने पर कम से कम दो सप्ताह तनहाई में बिताने पड़ेंगे। सरकार ने स्पष्ट किया है कि छात्रों और जरूरी काम से बाहर जाने वालों की जल्दी जांच की जाएगी और संक्रमण न होने की सूरत में उन्हें विदेश जाने दिया जाएगा, लेकिन लौटने पर उन्हें क्वैरंटाइन में रखा जा सकता है।

सरकार ने कहा है कि सड़क के रास्ते देश में आने-जाने वालों की जांच के लिए सीमा पर चेक पोस्ट पर स्वास्थ्य जांच की उचित व्यवस्था की जाएगी। कोरोना को लेकर व्यापक स्तर पर जागरूरता फैलाने की जरूरत है। लोगों तक सही जानकारी पहुंचे, यह सुनिश्चित करना होगा क्योंकि वॉट्सऐप और अन्य माध्यमों से इसे लेकर अजीबोगरीब सुझाव दिए जाने लगे हैं। लोग अपने आप तरह-तरह के उपचार करने लगे हैं। लोगों तक सही जानकारी पहुंचाने के अलावा मास्क तथा सैनिटाइजर जैसी चीजें आसानी से उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी करनी होगी।

कोरोना ठीक हो सकता है इससे संक्रमित होने का मतलब मौत नहीं है

दिसम्बर माह में चीन से शुरू हुआ कोरोना वायरस का आतंक अब एक-एक कर दुनिया के 70 से भी अधिक देशों में पैर पसार चुका है और दर्जन भर देशों में इसके चलते मौतें भी हो चुकी हैं। चीन में कोरोना संक्रमण के 80 हजार से भी ज्यादा मामले सामने आ चुके हैं और तीन हजार से अधिक मौतें हो चुकी हैं। संक्रमण के मामले में चीन, ईरान, इटली, कोरिया तथा सिंगापुर की स्थिति ज्यादा चिंताजनक है। दूसरी ओर कुछ दिनों पहले भारत में मिले तीन कोरोना मरीजों के ठीक होने के बाद अब दो दिनों के भीतर 11 राज्यों में कोरोना के कई संदिग्ध मरीजों के मिलने से हड़कंप मचा है। इनमें से लगभग सभी दूसरे देशों की यात्रा करके भारत लौटे थे। यही कारण है कि सरकार द्वारा आनन-फानन में सक्रियता दिखाते हुए इटली, ईरान, कोरिया और जापान के वीजा निलंबित कर 12 से भी अधिक देशों से आने वाले यात्रियों की जांच का निर्णय लिया गया है। चीन के बाहर भी करीब नौ गुना तेजी से फैल रहे कोरोना के बढ़ते खतरे को लेकर लोगों की चिंता बढ़ना तो स्वाभाविक है लेकिन इससे घबराने की बजाय इससे बचने के लिए विशेष सतर्कता और एहतियात बरतना सबसे जरूरी है। संतोषजनक स्थिति यह है कि भारत में कोरोना के नए मामले सामने आने के बाद भारत में भी चीन जैसे हालात न बनने पाएं, इसके लिए सरकार और स्वास्थ्य तंत्र तुरंत सतर्क हो गए हैं और इस वायरस का प्रसार रोकने के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं

दुनिया के अन्य देशों के मुकाबले अगर कोरोना का आतंक हमारे यहां अब तक इस कदर नहीं गहराया तो इसका सबसे बड़ा कारण यही रहा कि जहां चीन ने इस संक्रमण के सामने आने के बाद खबर को दबाने में काफी समय गंवा दिया, वहीं भारत ने समय रहते संक्रमण से बचाव के तरीकों पर कार्य करना शुरू कर दिया था। केरल में कोरोना संक्रमण के तीन मामले सामने आने के बाद ही सरकार द्वारा तमाम एहतियाती कदम उठाए गए थे और भारतीय नागरिकों को चीन न जाने की सलाह देते हुए वहां से आने वाले व्यक्तियों को ई-वीजा नहीं देने का निर्णय लिया गया था। दरअसल भारत व्यापार, कांफ्रेंस, पर्यटन, स्वास्थ्य और मरीजों के सहयोगी के लिए ई-वीजा जारी करता है।

दुनियाभर में कोरोना के आतंक को देखें तो इसने मौतों के मामले में वर्ष 2003 में कहर बनकर बरपे 'सार्स' (गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम) को भी काफी पीछे छोड़ दिया है। कोरोना वायरस के संबंध में चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग का मानना है कि कोरोना वायरस का

करीब 17 साल पहले चीन में आतंक मचा चुके सार्स से जुड़ाव खतरनाक है। कुछ वर्षों पहले सार्स नामक खतरनाक बीमारी का संबंध भी चीन से ही था, जिसके चलते करीब आठ सौ लोगों की मौत हुई थी। कोरोना संक्रमण को लेकर पूरी दुनिया में दहशत के माहौल को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पहले ही वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित कर दिया गया था और संगठन द्वारा कोरोना वायरस संक्रमण को आतंकवाद से भी गंभीर बताया जा चुका है। दरअसल कोई नहीं जानता कि कोरोना संक्रमण से विश्वव्यापी दहशत और हो रही मौतों का यह सिलसिला कहां जाकर थमेगा? विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को 'कोविड-19' (सीओवीआईडी-19) नाम दिया है, जिसका अर्थ है कोरोना वायरस डिजीज। चिंताजनक स्थिति यह है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन स्वयं यह स्वीकार कर रहा है कि विश्वभर में संक्रामक रोग अब पहले से कहीं ज्यादा तेजी

से फैल रहे हैं और 1970 के दशक से प्रतिवर्ष नए-नए रोगों के बारे में जानकारी मिल रही है। कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते दुनियाभर में निवेशकों की चिंता भी बढ़ी है। इस वायरस के खौफ के चलते चीन के साथ-साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी बहुत बड़ा नुकसान हो रहा है, जिसका असर आने वाले समय में लंबे समय तक देखा जाता रहेगा। जनवरी माह से लेकर अभी तक 11 लाख करोड़ रुपये डूबने का अनुमान लगाया जा रहा है। भारत में चीन से आने वाले कच्चे माल की उपलब्धता न होने के कारण उद्योगों पर बुरा असर पड़ रहा है। इसके अलावा पर्यटन उद्योग और विमानन क्षेत्र को भी काफी घाटा हो रहा है। भारत में रोजगार के क्षेत्र में पर्यटन क्षेत्र का करीब दस फीसदी योगदान है और जीडीपी में इसकी करीब सात फीसदी हिस्सेदारी है। क्वार्ट्ज इंडिया की एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले साल भारत में 1.09 करोड़ विदेशी पर्यटक आए थे लेकिन कोरोना के वैश्विक आतंक के चलते पर्यटकों की संख्या में इस साल बहुत बड़ी गिरावट आना तय है। पिछले साल विदेशी पर्यटकों से भारत को करीब 28 अरब डॉलर की आय हुई थी लेकिन कोरोना के कारण इस वर्ष पर्यटन क्षेत्र पर बहुत बुरा असर पड़ेगा। कोरोना को लेकर भले ही पूरी दुनिया में दहशत का माहौल है लेकिन ऐसा भी नहीं है कि कोरोना का संक्रमण हो जाने का सीधा अर्थ मौत ही है। अगर कोरोना से संक्रमित हुए लोगों के मामले देखें तो जहां भारत में केरल में मिले तीनों मरीज उपचार के बाद ठीक हो गए, वहीं चीन में अभी तक काफी लोगों को इलाज के बाद ठीक किया जा चुका है। हालांकि कोरोना वायरस के संक्रमण का अभी तक कोई पुख्ता इलाज नहीं है क्योंकि अब तक इसकी कोई वैक्सीन या टीका नहीं बना है। कोरोना से बचने का एकमात्र तरीका इससे बचने के लिए सुरक्षा के पर्याप्त उपाय अपनाया जाना ही है। बहरहाल, कोरोना के बढ़ते खतरे को देखते हुए बेहद जरूरी है कि भारत में अब कोरोना की दस्तक को हल्के में न लिया जाए और हर व्यक्ति को इससे बचने के तौर-तरीकों और उपायों की पूरी जानकारी हो ताकि भारत में चीन या इससे प्रभावित दूसरे देशों जैसे हालात बनने से बचा जा सके

20 सेकंड तक साबुन से हाथ धुलें, सर्दी-जुकाम से पीड़ित व्यक्ति से 3 फीट दूर रहें; हल्के गर्म पानी से नहाना भी फायदेमंद

क्या है कोरोनावायरस?

कोरोनावायरस (सीओवी), वायरस के ऐसे परिवार से संबंधित है, जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। कोरोनावायरस जूनोटिक (जानवरों से इंसानों में फैलने वाला) है। कई तरह के कोरोनावायरस जानवरों में पाए गए हैं लेकिन उन्होंने अभी तक इंसानों को संक्रमित नहीं किया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था।

क्या हैं इस बीमारी के लक्षण?

डब्लूएचओ के मुताबिक, बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है। इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्या उत्पन्न होती हैं। यह

वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है. इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है।

क्या हैं इससे बचाव के उपाय?

डब्लूएचओ के मुताबिक, कोरोनावायरस से बचने के लिए हाथों को साबुन से धोना चाहिए, मुंह और नाक को ढककर रखें। खांसते और छीकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिश्यू पेपर से ढककर रखें। जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें। अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

बारहवीं के बाद इन क्षेत्रों में हैं अपार संभावनाएं

12वीं पास करने के बाद से ही बच्चों के स्कूली शिक्षा के दिन पूरे हो जाते हैं और उसके बाद वह कॉलेज की तैयारियों में लग जाते हैं। ऐसे में 12वीं पास किए हुए बच्चों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि वह आगे की पढ़ाई किस फील्ड में करें। हालाँकि, दसवीं के एग्जाम के मार्क्स आने के बाद ही बहुत सारे बच्चे डिसाइड कर लेते हैं कि उन्हें किस स्ट्रीम की पढ़ाई करनी है। मसलन आर्ट लेना है, साइंस की पढ़ाई करनी है या कॉमर्स लेना है। जहाँ तक देखा गया है कि जिन बच्चों के दसवीं के मार्क्स अच्छे होते हैं वो साइंस स्ट्रीम की तरफ रुख करते हैं। वहीं जिनके मार्क्स कम होते हैं या जो बच्चे पढ़ाई में बहुत ही ज्यादा अच्छे नहीं होते हैं वो आर्ट्स सब्जेक्ट्स को चुनते हैं। हालाँकि आप किसी भी स्ट्रीम से पढ़ाई किये हों लेकिन 12वीं के बाद कॅरियर उपयोगी उच्च शिक्षा को चुनने में दिक्कत सभी के सामने आती ही है। ऐसे में हम यहां आपको बताएंगे कि साइंस, आर्ट्स और कॉमर्स में कैरियर के क्या ऑप्शन हैं।

पुष्पा शर्मा रिपोर्टर

साइंस

बायोलॉजी स्ट्रीम

साइंस में कॅरियर ऑप्शन के बारे में बात करें तो जिन बच्चों की मैथ स्ट्रांग होती है और जिनकी यह चाहत होती है कि उन्हें आगे चलकर इंजीनियरिंग करनी है, वह बच्चे 12वीं की साइंस स्ट्रीम में मैथ का चुनाव करते हैं। जिन बच्चों को लगता है कि वह डॉक्टरी के फील्ड में अपना भविष्य बनाएंगे तो वह बच्चे साइंस स्ट्रीम में बायोलॉजी का चुनाव करते हैं। हालाँकि किसी वजह से अगर बच्चे अपनी पसंदीदा फील्ड में नहीं जा पाते हैं तो उनके सामने कैरियर को लेकर कई समस्याएं खड़ी हो जाते हैं।

ऐसे में अगर आपने 12वीं बायोलॉजी से पास किया है तो आप बायोटेक्नोलॉजी, एग्रीकल्चर, फार्मेसी, होम्योपैथिक, डॉक्टर इन आयुर्वेद, बॉटनी, वाइल्ड लाइफ साइंस, पैथोलॉजी, मेडिसिन, वेटनरी साइंस के अलावा टीचिंग और फूड टेक्नोलॉजी में भी कॅरियर बना सकते हैं और कामयाबी हासिल कर सकते हैं।

मैथ्स स्ट्रीम

अगर अपने 12वीं मैथ से पास की है तो आपके पास भी कॅरियर के लिए बहुत सारी संभावनाएं उपलब्ध हैं। आप मरीन इंजीनियरिंग, मर्चेंट नेवी, एग्रीकल्चर, इंजीनियरिंग, नैनोटेक्नोलॉजी, रोबोटिक साइंस, एनवायरमेंट साइंस, प्लास्टिक इंजीनियरिंग और ह्यूमन में कॅरियर का चुनाव कर सकते हैं।

आर्ट्स में क्या है संभावना?

अक्सर बच्चों के मन में यह धारणा होती है कि आर्ट्स से पढ़ाई करने के बाद कॅरियर की संभावनाएं बेहद सीमित होती हैं। अगर आप भी ऐसी ही सोच रखते हैं तो इसे बदल लें।

हम आपको कुछ ऐसे कॅरियर के विकल्पों के बारे में बताएंगे जो आर्ट्स के स्टूडेंट अपनाते हैं और इसमें बेहतर कमाई के साथ साथ कॅरियर में अच्छी ऊंचाई को भी हासिल करते हैं। इसमें इंटीरियर डेकोरेशन, फैशन इंडस्ट्री, फाइन आर्ट्स, डिजाइनिंग, होटल मैनेजमेंट, बिजनेस मैनेजमेंट, सिविल सर्विसेज के क्षेत्र में स्टूडेंट जा सकते हैं। इसके अलावा फिल्म मेकिंग, टीचिंग और राइटिंग, मास कम्युनिकेशन और जर्नलिज़्म जैसे क्षेत्र भी आर्ट के स्टूडेंट्स के सामने मौजूद हैं।

कॉमर्स फील्ड में कॅरियर के ऑप्शन

जिन बच्चों का रुझान मैथ और एकाउंटिंग की तरफ होता है वो बच्चे 12वीं में कॉमर्स को चुनते हैं। अगर आपने 12वीं कॉमर्स से की है तो आपके सामने कॅरियर के रूप में कंपनी सैक्रेटरी, बीबीए, अकाउंट, फाइनांस, चार्टर्ड एकाउंटेंट, टैक्स, इकॉनोमिक्स, मैनेजमेंट और बैंकिंग जैसे क्षेत्र उपलब्ध हैं। तो ये हैं वो फिल्ड्स जिनमें आप अपने कॅरियर बना सकते हैं चाहें आप साइंस के स्टूडेंट हों, आर्ट्स के हों या कॉमर्स के। लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि किसी भी फिल्ड का चुनाव करते समय आपको अपनी रूचि का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। ऐसा न हो कि किसी के कहने या किसी के देखा-देखी आप किसी क्षेत्र का चुनाव कर लें और बाद में पछतायें।

घरेलू महिलाओं के लिए बेस्ट है यह पार्ट

टाइम जॉब

आज के समय में अधिकतर महिलाएं वर्किंग हैं, लेकिन कुछ महिलाएं ऐसी भी हैं, जो फुल टाइम घर-परिवार की जिम्मेदारी उठाना पसंद करती हैं। ऐसे में जॉब करने की जगह पूरा दिन घर को ही देती हैं। लेकिन घर पर रहकर भी अगर आप आर्थिक जिम्मेदारी में अपना सहयोग देना चाहती हैं तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। ऐसे कई पार्ट टाइम जॉब या काम हैं, जिसे महिलाएं घर से रहकर भी कर सकती हैं और अच्छी खासी आमदनी कर सकती हैं। तो चलिए जानते हैं ऐसे कही कुछ काम के बारे में-

ट्यूटर

अगर आपके पास दिन का समय खाली होता है तो आप उस समय अपने आस-पड़ोस के बच्चों को पढ़ा सकती हैं। वर्तमान समय में, बच्चों की पढ़ाई इतनी टफ होती जा रही है कि पैरेंट्स बच्चों के लिए ट्यूटर रखना पसंद करते हैं। अगर आप बच्चों को अच्छी तरह हैंडल करके उन्हें पढ़ा सकती हैं तो बतौर ट्यूटर काम कर सकती हैं।

कॉल सेंटर एजेंट

आज के समय कॉल सेंटर एजेंट बनने के लिए आपको नौ से पांच की जॉब करने की आवश्यकता नहीं है। टेवल से लेकर हॉस्पिटैलिटीज से जुड़ी कई कंपनियां अब घरेलू महिलाओं को भी यह काम मुहैया करा रही है। अगर आपको अपना अधिकतर समय फोन पर गुजारने और कस्टमर्स की मदद करने से कोई परहेज नहीं है तो आप घर से बतौर कॉल सेंटर एजेंट बनकर काम कर सकती हैं।

लेखक

फ्रीलांस राइटर भी एक ऐसी जॉब है, जिसे घर से ही किया जा सकता है। अगर आपकी लेखनी में दम है तो आप अपने लिखे लेखों, कविताओं, कहानियों व स्क्रिप्ट आदि को अखबार से लेकर मैगजीन, ऑनलाइन वेबसाइट आदि को भेज सकती हैं। एक बार अगर आपका लिखा गया लेख उन लोगों को पसंद आता है तो आपको घर बैठे ही काफी अच्छा काम मिल सकता है।

ऑनलाइन जॉब

अगर आप घर बैठकर अच्छी आमदनी करना चाहती हैं तो ऑनलाइन जॉब सबसे बेहतर ऑप्शन है। जैसे आप वीडियो बनाकर यूट्यूब के जरिए आमदनी करें या फिर ऑनलाइन ट्यूटर, लैंग्वेज टीचर, योगा टीचर आदि बनकर काम कर सकती हैं। इसके अलावा आप ऑनलाइन सर्वे से लेकर ट्रांसक्रिप्शनिस्ट व ब्लॉगर आदि बनकर कमाई कर सकती हैं।

कॅरियर को बेहतर बनाने के लिए अपनाएं यह आसान टिप्स

जीवन में हर व्यक्ति सफलता पाने की चाह रखता है और इसके लिए वह कड़ी मेहनत भी करता है। लेकिन हर व्यक्ति को कॅरियर में सफलता नहीं मिलती। ऐसे में व्यक्ति यह सोचता है कि आखिरकार सफल लोग ऐसा क्या करते हैं या फिर उनमें ऐसी कौन सी खासियत है, जिनसे उनके हाथ सिर्फ तरक्की लगती है। अगर आप भी ऐसा ही सोचते हैं तो अब आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। कॅरियर को बेहतर बनाना वास्तव में इतना भी कठिन नहीं है। बस आपको कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना होता है। तो चलिए आज हम आपको बताते हैं कि कॅरियर को बेहतर बनाने के लिए आपको क्या करना चाहिए-

बनाएं छोटे गोल्स

कॅरियर को बेहतर बनाने के लिए बड़े लक्ष्यों से पहले छोटी सफलताओं पर फोकस करना जरूरी है। आप दो साल बाद या पांच साल बाद खुद को कहां देखते हैं, सिर्फ यही सोचना काफी नहीं है। बल्कि उस जगह तक पहुंचने के लिए रास्ता आपको आज से ही तय करना है। बड़ी सफलता प्राप्त करने के लिए उसे छोटे-छोटे हिस्सों में बांट लें। मसलन, कॅरियर में जो मुकाम आप हासिल करना चाहते हैं, उसके लिए आपके भीतर कौन-कौन सी क्वालिटी होनी चाहिए और अपने स्किल्स को इंप्रूव करने के लिए आप क्या करते हैं, यह भी बेहद जरूरी है। इसलिए हर दिन कुछ छोटे-छोटे गोल्स तय करें। जब आप ऐसा करेंगे तो बड़ी सफलता आपको खुद ब खुद मिल जाएगी।

स्मार्ट वर्क

आज के समय में सिर्फ हार्ड वर्क करना ही काफी नहीं है, बल्कि यह भी जरूरी है कि आप स्मार्ट वर्क करना सीखें। अगर आप कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन उसे कोई नोटिस नहीं करता या फिर उसका श्रेय कोई और ले लेता है तो इससे आप कभी भी अपने करियर को बेहतर नहीं बना पाते। इसलिए अपने काम पर फोकस करने के साथ-साथ आप इस बात का भी ध्यान दें कि वह आपके सीनियर्स की नजर में आए। आप चाहें तो अपने द्वारा किए गए कार्य को सोशल मीडिया पर पोस्ट करें व अपने सीनियर्स से फीडबैक लें। इस तरह आपका काम दूसरों की नजर में आएगा और आपकी सफलता के चांसेज बढ़ेंगे।

बनाएं नेटवर्क

वर्तमान समय में कॅरियर को बेहतर बनाने में नेटवर्क भी बेहद काम आता है। जब आप अपनी फील्ड में लोगों से जुड़े होते हैं और उनसे आपके बेहतर संबंध होते हैं तो कोई भी अवसर आपसे छूटता नहीं है। हो सकता है कि आपको इंटरनेट या अन्य तरीकों से सिर्फ जॉब के बारे में पता चले, लेकिन जब उस कंपनी में जॉब करने वाला कोई व्यक्ति आपका जानकार होता है तो आपको कंपनी की पॉलिसी व उसके माहौल के बारे में भी पता चलता है, जिससे आपके लिए यह डिसाइड करना आसान हो जाता है कि आपके लिए वहां जॉब करना सही रहेगा या नहीं। बेहतर नेटवर्क एक नहीं, बल्कि कई तरीकों से आपके कॅरियर को बेहतर बनाने में मदद करता है।

महिला दिवस पर विशेष

पुरुषों से कम नहीं हर क्षेत्र में आगे हैं आज की महिलाएं

हर वर्ष 8 मार्च को विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। हमारे देश की महिलायें आज हर क्षेत्र में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर अपनी ताकत का अहसास करवा रही हैं। भारत में रहने वाली महिलाओं के लिये इस वर्ष का महिला दिवस कई नई सौगातें लेकर आया है। महिलाओं के लिये अच्छी खबर यह है कि इस बार संसद में महिला सांसदों की संख्या बढ़कर 78 हो गयी है जो अब तक की सबसे ज्यादा है। कुछ दिनों पूर्व सुप्रीम कोर्ट ने भी महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन देने का आदेश दिया है। अब सेना में भी महिलायें पुरूषों के समान पदों पर काम कर पायेंगी। इससे महिलाओं का मनोबल बढ़ेगा। **(रजनी तोमर)**

संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी महिलाओं के अधिकार को बढ़ावा और सुरक्षा देने के लिए दुनियाभर में कुछ मापदंड निर्धारित किए हैं। महिला दिवस उन महिलाओं को याद करने का दिन है। जिन्होंने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए अथक प्रयास किए। वर्तमान दौर में महिलाओं ने अपनी ताकत को पहचान लिया है और काफी हद तक अपने

अधिकारों के लिए लड़ना भी सीख लिया है। अब महिलाओं ने इस बात को अच्छी तरह जान लिया है कि वे एक-दूसरे की सहयोगी हैं।

महिलाओं का काम अब केवल घर चलाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि वे हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। परिवार हो या व्यवसाय, महिलाओं ने साबित कर दिखाया है कि वे हर वह काम करके दिखा सकती हैं जिसमें अभी तब सिर्फ पुरुषों का ही वर्चस्व माना जाता था। शिक्षित होने के साथ ही महिलाओं की समझ में वृद्धि हुयी है। अब उनमें खुद को आत्मनिर्भर बनाने की सोच पनपने लगी है। शिक्षा मिलने से महिलाओं ने अपने पर विश्वास करना सीखा है और घर के बाहर की दुनिया को जीतने का सपना सच करने की दिशा में कदम बढ़ाने लगी हैं सरकार ने महिलाओं के लिए नियम-कायदे और कानून तो बहुत सारे बना रखे हैं किन्तु उन पर हिंसा और अत्याचार के आंकड़ों में अभी तक कोई कमी नहीं आई है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 15 से 49 वर्ष की उम्र वाली 70 फीसदी महिलाएं किसी न किसी रूप में कभी न कभी हिंसा का शिकार होती हैं। इनमें कामकाजी व घरेलू महिलायें भी शामिल हैं। देशभर में महिलाओं पर होने वाले अत्याचार के लगभग 1.5 लाख मामले सालाना दर्ज किए जाते हैं। जबकि इसके कई गुणा अधिक मामले दबकर रह जाते हैं।

घरेलू हिंसा अधिनियम देश का पहला ऐसा कानून है जो महिलाओं को उनके घर में सम्मानपूर्वक रहने का अधिकार सुनिश्चित करता है। इस कानून में महिलाओं को सिर्फ शारीरिक हिंसा से ही नहीं बल्कि मानसिक, आर्थिक एवं यौन हिंसा से बचाव करने का अधिकार भी शामिल है। भारत में लिंगानुपात की स्थिति भी अच्छी नहीं मानी जा सकती है। लिंगानुपात के वैश्विक औसत 990 के मुकाबले भारत में 941 ही है। हमें भारत में लिंगानुपात सुधारने की दिशा में विशेष काम करना होगा ताकि लिंगानुपात की खराब स्थिति को बेहतर बनायी जा सके।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान का जरूर कुछ असर दिखने लगा है। इस अभियान से अब देश में महिलाओं के प्रति सम्मान बढ़ने लगा है। जो इस बात का अहसास करवाता है कि आने वाले समय में महिलाओं के प्रति समाज का नजरिया सकारात्मक होने वाला होगा। विकसित देशों की तुलना में हमारे देश में महिलाओं की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी नहीं है। आज भी महाराष्ट्र के बीड़, गुजरात के सूरत, भुज में घटने वाली महिला उत्पीड़न की घटनायें सभ्य समाज पर एक बदनुमा दाग लगा जाती हैं।

9 महीने में समुद्र के रास्ते दुनिया नापने वालीं 6 महिलाएं

लेफ्टिनेंट कमांडर	लेफ्टिनेंट कमांडर	लेफ्टिनेंट कमांडर	लेफ्टिनेंट कमांडर	लेफ्टिनेंट कमांडर	लेफ्टिनेंट कमांडर
पायल गुप्ता	पी स्वाति	विजया देवी	वर्तिका जोशी	प्रतिभा जामवाल	एश्वर्या बोड्डापटी

जब मुगल किलेदार ने ग्वालियर दुर्ग मराठों की बजाय गोहद के राणा को सौंप दिया

डॉ. सुरेश सम्राट
वरिष्ठ संपादक, लेखक
9406502099

गोहद के राणा भीम सिंह और मराठा सरदार विट्ठल शिवदेव के बीच सन् 1754 में उत्पन्न हुए एक छोटे से विवाद ने बढ़ते-बढ़ते इतना बड़ा रूप धारण कर लिया कि ग्वालियर दुर्ग, अकारण ही इस विवाद में फंस गया। गोहद के राणा को सबक सिखाने से पहले, ग्वालियर दुर्ग पर कब्जा करने की विट्ठल शिवदेव की योजना उस समय धरी रह गई, जब मुगल किलेदार ने ग्वालियर दुर्ग मराठों की बजाय गोहद के राणा को सौंप दिया। विट्ठल शिवदेव को इस बात से भी बहुत धक्का लगा कि पेशवा ने भी सहायता भेजने की उसकी मांग पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया। लेकिन विट्ठल शिवदेव को उस समय आशा की किरण दिखी, जब कुछ माह बाद ही सन् 1755 में मराठा सेना अपने समयबद्ध अभियान को पूरा करके दिल्ली से लौटते हुए ग्वालियर से गुजरी। तब विट्ठल शिवदेन ने इस मौके का लाभ उठाने की योजना बनाई। मराठा सेना का नेतृत्व रघुनाथ राव कर रहा था। उसने भी अनुकूल परिस्थिति देखकर ग्वालियर दुर्ग पर हमला करने का निश्चय किया। इसकी जानकारी मिलते ही दुर्ग पर काबिज गोहद के राणा ने सुलह की चर्चा करना ही उचित समझा। जो सुलह हुई उसमें मराठों द्वारा विजित जाट चौकियां राणा को वापस सौंपने और राणा द्वारा ग्वालियर दुर्ग खाली करने की शर्त के अलावा दुर्ग में उपलब्ध सामरिक सामग्री को बराबर बांटने पर सहमति हुई। लेकिन शर्तों का क्रियान्वयन विवाद का विषय बन गया और यह संधि लागू नहीं हो सकी। गुस्साए मराठों ने तब ग्वालियर नगर को तहस-नहस करना शुरू कर दिया। लेकिन राणा इससे विचलित नहीं हुआ। उसने मराठों द्वारा भेजे गए संदेशों को भी अनसुना कर दिया। फलस्वरूप 7 जून 1755 को रघुनाथ राव ने ग्वालियर दुर्ग पर भीषण आक्रमण कर दिया। राणा ने भी वीरतापूर्वक मुकाबला किया परन्तु वह खेत रहा। राणा की किले में ही अन्त्येष्टि की गई और उसकी एक प्रेयसी उसके साथ सती हुई।

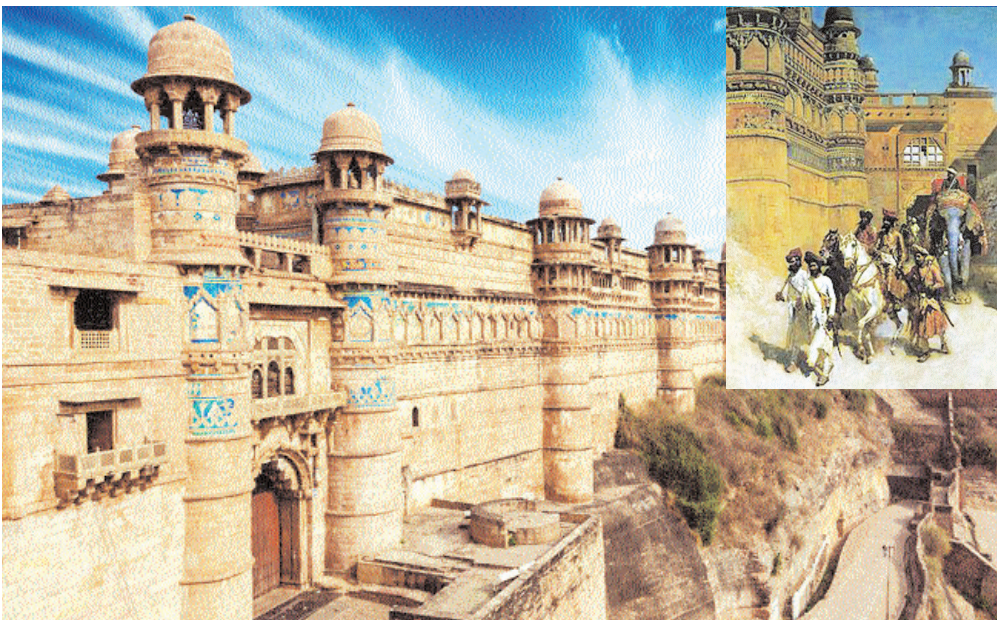

राणा की मृत्यु के बाद भी युद्ध चलता रहा, जिसका अन्त फिर एक समझौते पर हुआ। समझौते के तहत ग्वालियर दुर्ग और उसके नीचे का क्षेत्र विट्ठल शिवदेव के नियंत्रण में आकर, पेशवा के अधीन हो गया। गोहद पर राणा भीमसिंह के उत्तराधिकारी, राणा गिरधर प्रताप सिंह का आधिपत्य मराठों ने स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सन् 1755 में ग्वालियर दुर्ग पर, पेशवा का झण्डा फहरा दिया गया। लेकिन ग्वालियर दुर्ग पर, पेशवा का यह आधिपत्य कितना आकस्मिक और अनियोजित था, इसका प्रमाण इस तथ्य से मिल जाता है कि जब विट्ठल शिवदेव ने 17 अगस्त 1755 को पेशवा से ग्वालियर दुर्ग हस्तगत करने में हुए युद्ध-व्यय के 12 लाख रुपए मांगे, तो पेशवा ने यह व्यय देने से साफ इन्कार कर दिया। उसका कहना था कि यह युद्ध उसकी अनुमति से नहीं लड़ा गया था। वस्तुतः पेशवा के नाम पर चढ़ी यह उपलब्धि, विट्ठल शिवदेव और गोहद के राणा के बीच तनिक से विवाद का बहुत बड़ा परिणाम थी। बाद में पेशवा की ओर से गोपाल गणेश बर्वे को ग्वालियर की किलेदारी सौंपी गई।

इस प्रकार एक छोटे से विवाद ने ग्वालियर में मराठों के लिए कई नए रास्ते खोल दिए। विट्ठल शिवदेव की जरा सी नाराजगी ने ग्वालियर को मराठा इतिहास के खलनायक रघुनाथ राव उर्फ राधोबा तथा अनेक मराठा सरदारों की रणस्थली बना दिया, जिसने आगे चलकर ग्वालियर के इतिहास में हार जीत के अनेक अध्याय जोड़े। विट्ठल शिवदेव और राणा के बीच जो विवाद हुआ, उसने ऐसा स्थायित्व पकड़ा कि मराठों और गोहद के राणाओं के बीच संबंध फिर सुधर नहीं सके। हालांकि अगस्त 1755 में ग्वालियर दुर्ग पर पेशवा का झण्डा फहरा देने के बाद मराठों ने समझौते के अनुरूप राणा भीम सिंह के उत्तराधिकारी गिरधर प्रताप सिंह, जो पुत्रहीन राणा के एक सामंत का बेटा था, को गोहद सौंप दिया था, लेकिन राणा गिरधर प्रताप सिंह की कुछ समय बाद ही मृत्यु हो गई। तब उसका छोटा भाई छत्रसिंह सन् 1757 में उसका उत्तराधिकारी बना। राणा छत्र सिंह का सन् 1757 से 1785 तक का राज्यकाल, गोहद राज्य का सबसे गौरवशाली काल माना जाता है। वस्तुतः इस दौर में ग्वालियर क्षेत्र का इतिहास, घटनाक्रम के लिहाज से, छोटे से राज्य गोहद और मराठों के वैमनस्य के इर्द-गिर्द ही घूमता रहा। गोहद के राणाओं ने सन् 1737 में मराठों की सहायता से पुनर्स्थापित होने के बावजूद, आगे चलकर मराठों के साथ हुए संघर्ष में कई बार मराठों को शिकस्त दी। जरूरत समझी तो डूबती मुगल सल्तनत के सम्राट से निरर्थक सा शाही पट्टा भी प्राप्त किया। यही नहीं मराठों से निपटने के लिए गोहद के राणा ने अंग्रेजों और बंगाल के मीर कासिम से भी संपर्क किया। ग्वालियर दुर्ग पर अधिकार मिल जाने जैसे उतार-चढ़ाव भरे घटनाक्रम के बावजूद गोहद को अन्ततः आगे चलकर मराठों से पराजित होना पड़ा। सन् 1757 से 1761 तक गोहद और ग्वालियर क्षेत्र मराठा-शक्ति की अपनी उलझनों के कारण अपेक्षा कृत शांत रहा, लेकिन यह अवधि मराठों के लिए बहुत उतार-चढ़ाव वाली रही। वस्तुतः यह दौर मराठों के लिए इतना चुनौती भरा रहा कि उनके सामने जीवन और मरन जैसे संकट उत्पन्न हुए।

पुष्पांजली टुडे सामान्य ज्ञान

1.भारत में पहली आधुनिक जनगणना किस वर्ष हुई थी ?

उत्तर- 1881

2. किस दशकीय वर्ष में नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की गई थी ?

उत्तर- 1911- 21

3. किस वर्ष को जनसंख्या का महाविभाजन वर्ष कहा जाता है?

उत्तर - 1921

4. स्वतंत्रता से अभी तक 2011 सहित कुल कितनी बार जनगणना की जा चुकी है ?

उत्तर- 7 बार

5. वर्ष 2011 के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या है ?

उत्तर- 1210.2 मिलियन

6. पूरे विश्व की जनसंख्या के कितने प्रतिशत लोग भारत में निवास करते हैं?

उत्तर- वर्ष 1872 से अभी तक कुल कितनी बार जनगणना की जा चुकी है ?

उत्तर- 15 बार

7. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का लिंगानुपात है?

उत्तर- 943

8.भारत के किस राज्य का लिंगानुपात सबसे अधिक है ?

उत्तर - बाल लिंगानुपात गणना में कितनी आयु वर्ष तक के बच्चों को शामिल किया जाता है?

उत्तर - 0-6 वर्ष

9. भारत के किस राज्य में ग्रामीण जनसंख्या सर्वाधिक निवास करती है ?

उत्तर - उत्तर प्रदेश

10. वर्ष 2011 की भारतीय जनगणना का शुभंकर क्या था?

उत्तर - एक महिला प्रगणक

11.इंटरनेट वास्तव में किस एजेंसी का प्रोजेक्ट है ?

उत्तर - एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी

12. इंटरनेट के संस्थापक कौन थे?

उत्तर - टीम बर्नर ली

13. इंटरनेट का जनक किसे कहा जाता है ?

उत्तर- विंट सेर्फ

14. इंटरनेट की स्थापना किस वर्ष की गई थी ?

उत्तर - 1969

15. इंटरनेट प्रणाली क्या है ?

उत्तर- इंटरकनेक्टेड नेटवर्क प्रणाली

16.इंटरनेट की सेवा क्या कहलाती है ?

उत्तर - होस्ट

17. ईमेल एड्रेस में किन का नाम प्रयोग किया जाता है ?

उत्तर - यूजर्स का नाम एवं डोमेन नाम

18. वाईफाई का तात्पर्य क्या है ?

उत्तर- वायरलेस फाइडिलिटी

19. ब्राउज़िंग वेबसाइट पर दर्शाए जाने वाला डॉट ओआरजी (.श्द्द) का तात्पर्य क्या होता है?

उत्तर - नॉन प्रॉफिट ऑर्गेनाइजेशन

20. जंक ईमेल को क्या कहा जाता है?

उत्तर- स्पेम

21. नोबेल पुरस्कार किसकी याद में वितरित किया जाता है ?

उत्तर - अल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबेल

22. नोबेल पुरस्कार किस देश द्वारा दिया जाता है ?

उत्तर - स्वीडन

23. शांति के लिए नोबेल पुरस्कार किस देश में वितरित किया जाता है ?

उत्तर - ओसलो (नार्वे)

24. सर्वप्रथम किस वर्ष नोबेल पुरस्कार प्रदान करने की परंपरा प्रारंभ हुई ?

उत्तर- 1901

25. पुरस्कार विजेताओं को किस दिन पुरस्कार से नवाजा जाता है ?

उत्तर- 10 दिसम्बर

26. वर्ष 1901 में सर्वप्रथम किसे नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ?

उत्तर- फेडरिक पेस्सी एवं हेनरी डूनाण्ट

27. नोबेल पुरस्कार जीतने वाला सर्वाधिक युवा विजेता है?

उत्तर- मलाला यूसुफजई

28. किस व्यक्ति या संगठन को सर्वाधिक तीन बार नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है ?

उत्तर- इंटरनेशनल कमेटी ऑफ द रेडक्रॉस

29. नोबेल पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय महिला कौन थी?

उत्तर- मदर टेरेसा

30. वर्ष 2009 में शांति का नोबेल पुरस्कार किसे प्रदान किया गया था ?

उत्तर- बराक ओबामा

Vision 2030

THE FUTURE IS OURS TO SEE

GK महाकुम्भ

सबसे बड़ी प्रतियोगिता।

आपको जानकर खुशी होगी कि ग्वालियर, दतिया और भिंड में पहली बार एक ऐसी प्रतियोगिता हो रही है जो आपको, कुछ महायोद्धाओं के साथ आपका ज्ञान बढ़ाने का मौका देगा।

तो दिखाओ अब अपनी प्रतिभा, सबको बराबर मौका है पढ़ने का, और खुद को साबित करने का।

कह दो सबसे कि – मुझको कब तक रोकोगे?

यह प्रतियोगिता फरवरी से शुरु होकर 16 अगस्त तक चलेगी जो रविवार-रविवार अलग-अलग संस्थानों पर होगी।

हर चरण में 10% छात्र आगे की ओर जाएंगे, और 90% बाहर होंगे, आप एक बार फॉर्म भरकर 3 बार एग्जाम दे सकते हो।

PUSHPANJALI JANKALYAN FOUNDATION Reg. No. - 02/42/01/22550/18

नई सोच नई पहल

आपके सम्मान में पुरुस्कार

प्रथम स्थान	–	कार
द्वितीय स्थान	–	लैपटॉप
तृतीय स्थान	–	स्मार्ट TV
चतुर्थ-10वाँ स्थान	–	स्मार्ट्फोन्स
11वाँ-51 वाँ स्थान	–	हाथ घड़ी

PUSHPANJALI TODAY न्यूज़ नई सोच नई पहल

- सभी प्रश्न पुष्पांजली टुडे मासिक पत्रिका, न्यूज पेपर, पुष्पांजली टुडे यूट्यूब चैनल **"VISION 2030"** App से ही पूछे जाएंगे इसलिये App डाउनलोड करके पढाई शुरु करें।
- आप किसी भी क्लास के छात्र हों या ना हों, इस प्रतियोगिता में कोई भी हिस्सा ले सकता है, शिक्षक भी।
- सहयोग: – **पुष्पांजली टुडे ग्रुप**, "VISION 2030" GROUP, MEESHO Online शॉपिंग App
- मीशो App से घर बैठे ही लाखों रुपय कमाने के लिये आप हमारे ऐडवाइजर से मिलें, या घर से ही कॉल पर जानकारी लें।

प्रतियोगिता शुल्क ₹ 20 मात्र

अगर आप स्कूल या कोचिंग चलाते हैं तो प्रमोशन के लिये सम्पर्क करें।

पहली बार खोलेंगे गुरु और शिष्य एक साथ, 51 गुरुजनों को मिलेगा मौका अपने शिष्यों को जिताने का, साथ जीतेंगे सरप्राइज गिफ्ट्स क्योंकि आज हम जो भी हैं अपने परिवार और माता-पिता की वजह से, तो 16 अगस्त को मंच पर होंगे 51 शिष्य, 51 गुरूजन, और 51 पेरेन्टस एक साथ। आपके रोज के इस्तेमाल के हमारे पास 3 लाख से ज्यादा प्रोडक्ट्स उपलब्ध हैं इसलिये अभी कॉल करें।

नोट: – जिसके पास भी जानकारी ना पहुँचे तो एक मित्र होने के नाते आपका कर्तव्य है कि आप सबको इस प्रतियोगिता में भाग दिलाएँ।

कॉल करने का समय : सुबह 10.00 बजे से शाम 6.00 बजे तक

ऑफिस: – भाऊ साहब की पोतिनीस, A Block, 404 गोले का मंदिर, देना बैंक के पास ग्वालियर 474005

सम्पर्क करें – 9691937250, 9109112976/77/79

Neha Graphics # 9926891919

हर पीढ़ी के लिए आदर्श हैं शहीद ए आजम भगत सिंह

ज़रा याद करो कुर्बानी

23 मार्च को हमारे देश के वीरे शहीद 1931 में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी दी गयी थी. केंद्रीय असेंबली में बम फेंकने के जिस मामले में भगत सिंह को फांसी की सजा हुई थी उसकी तारीख 24 मार्च तय की गयी थी. लेकिन भगत सिंह के समर्थन में इतने प्रदर्शन हो रहे थे कि अंग्रेज सरकार डरी हुई थी और उसने तय तारीख से पहली ही भगत सिंह, राजगुरू और सुखबीर को फांसी दे दी.

जब यह बात जेल से बाहर गयी, तो लोग बेचैन हो गये और सच जानने के लिए परेशान हो गये. अखबारों में खबर छपी थी कि भगत सिंह, राजगुरू और सुखबीर को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी दे दी गयी और इस तरह देश की आजादी के लिए ये तीन युवाओं ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी.

भगत सिंह को फांसी दिये जाने का पूरे देश में इतना विरोध हो रहा था कि अंग्रेज सरकार डरी हुई थी और कहीं कोई आंदोलन ना भड़क जाये इस डर से अंग्रेजों ने इनके शव के टुकड़े किये और फिर उन्हें बोरियों में भरकर फिरोजपुर ले जाया गया और वहां इनके शव को मिट्टी का तेल डालकर जलाने का प्रयास किया गया, लेकिन यह संभव नहीं हो पाया क्योंकि ग्रामीणों ने देख लिया था, जिसके बाद अंग्रेज उनके शव को सतलुज नदीं में फेंककर भाग गये, जिसके बाद ग्रामीणों ने उनके शव को एकत्रित कर उनका दाह संस्कार किया.

जेल की कठिन जिंदगी

भगत सिंह को किताबें पढ़ने का इतना शौक था कि एक बार उन्होंने अपने स्कूल के साथी जयदेव कपूर को लिखा था कि वो उनके लिए कार्ल लीबनेख की मिलिट्रिज़म, लेनिन की लेफ़्ट विंग कम्युनिजम और अपटन सिनक्लेयर का उपन्यास द स्पाई कुलबीर के जरिए भिजवा दें।

भगत सिंह जेल की कठिन जिंदगी के आदी हो चले थे। उनकी कोठरी नंबर 14 का फर्श पक्का नहीं था। उस पर घास उगी हुई थी। कोठरी में बस इतनी ही जगह थी कि उनका पाँच फिट, दस इंच का शरीर बमुश्किल उसमें लेट पाए।

तीन क्रांतिकारी

मेहता के जाने के थोड़ी देर बाद जेल अधिकारियों ने तीनों क्रांतिकारियों को बता दिया कि उनको वक?त से 12 घंटे पहले ही फांसी दी जा रही है। अगले दिन सुबह छह बजे की बजाय उन्हें उसी शाम सात बजे फांसी पर चढ़ा दिया जाएगा। भगत सिंह मेहता द्वारा दी गई किताब के कुछ पन्ने ही पढ़ पाए थे। उनके मुंह से निकला, क्या आप मुझे इस किताब का एक अध्याय भी ख़त्म नहीं करने देंगे?भगत सिंह ने जेल के मुस्लिम सफ़ाई कर्मचारी बेबे से अनुरोध किया था कि वो उनके लिए उनको फांसी दिए जाने से एक दिन पहले शाम को अपने घर से खाना लाएं।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में शहीद ए आजम भगत सिंह एक ऐसा नाम हैं जिनके बिना शायद आजादी की कहानी अधूरी रहती। वह सिर्फ युवाओं ही नहीं, बल्कि बुजुर्गों और बच्चों के भी आदर्श हैं। लाहौर सेंट्रल जेल में उनके द्वारा लिखी गई 400 पृष्ठ की डायरी उनके विहंगम व्यक्तिव की कहानी बयां करती है। वह लेखकों, रचनाकारों, इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों सबके लिए प्रेरणास्रोत रहे हैं। भगत सिंह को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चमनलाल क्रांतिवीर मानने के साथ ही वैचारिक क्रांति का पुरोधा भी मानते हैं। उनका कहना है कि मात्र 23 साल की उम्र में शहीद हो जाने वाले इस युवा के बिना शायद आजादी की कहानी अधूरी कहलाती।

चमनलाल ने अपनी पुस्तक 'क्रांतिवीर भगत सिंह- अभ्युदय और भविष्य' में शहीद ए आजम के विहंगम व्यक्तित्व, कृतित्व और उनकी लोकप्रियता का व्यापक वर्णन किया है। उनका कहना है कि यदि भगत सिंह न होते तो आज देश के लिए शायद कोई ऐसा आदर्श न होता जिसने वैचारिक क्रांति के दम पर ऐसे शासन की नींव हिला दी जिसका साम्राज्य दुनियाभर में फैला था। उन्होंने बताया कि 23 मार्च 1931 को भगत सिंह की फांसी के बाद भारत का पत्रकारिता जगत उनसे संबंधित खबरों से अटा पड़ा रहता था। शहीद ए आजम की जीवनी लिखने के लिए जितेंद्रनाथ सान्याल को गोरी हुकूमत ने दो साल कैद की सजा सुनाई थी।

चमनलाल के अनुसार भगत सिंह ने जहां क्रांतिवीर के रूप में दुनिया के मानसपटल पर अपनी छाप छोड़ी, वहीं पत्रकार के रूप में भी उन्होंने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। उन्होंने कहा कि अलीगढ़ के शादीपुर गांव में स्थित स्कूल आज भी इस बात का गवाह है कि देश के लिए मर मिटने वाला यह नौजवान एक कुशल शिक्षक भी था। समाजशास्त्री स्वर्ण सहगल के अनुसार भगत सिंह के लिए क्रांति का मतलब हिंसा से नहीं, बल्कि वैचारिक परिवर्तन से था। बहरों को सुनाने के लिए सेंट्रल असेंबली में धमाका कर वह दुश्मन को उसी की भाषा में जवाब देने वाले योद्धा के रूप में नजर आते हैं। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए सांडर्स को गोली से उड़ा देना भी उनके इसी जज्बे का प्रतीक था। शहीए ए आजम के पोते (भतीजे बाबर सिंह संधु के पुत्र) यादविंदर सिंह ने कहा कि उनके दादा द्वारा लाहौर सेंट्रल जेल में लिखी गई डायरी इस बात की गवाह है कि उनके बिना भारत का स्वाधीनता संग्राम संभवत- अधूरा कहलाता। उन्होंने कहा कि भगत सिंह की इस डायरी में जहां वैचारिक तूफान दिखाई देता है, वहीं उनके द्वारा लिखे गए गणित और राजनीति के सूत्र उनके व्यक्तित्व की विशालता को दर्शाते हैं। यादविंदर के अनुसार उनके दादा द्वारा जेल में की गई लंबी भूख हड़ताल उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रतीक थी जो युवाओं को देश के लिए अपने भीतर संकल्प शक्ति पैदा करने की सीख देती है।

बहुत छोटी उम्र में असहयोग आंदोलन में शामिल हो गये थे चन्द्रशेखर आजाद

मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूंगा÷ यह नारा था भारत की आजादी के लिए अपनी जान की कुर्बानी देने वाले देश के महान क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद का। मात्र 24 साल की उम्र जो युवाओं के लिए जिंदगी के सपने देखने की होती है उसमें चन्द्रशेखर आजाद अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते हुए शहीद हो गए। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को उन्नाव जिले के बदरका कस्बे में हुआ था। पिता का नाम सीताराम तिवारी तथा माता का नाम जगरानी देवी था। चन्द्रशेखर की पढ़ाई की शुरूआत मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले से हुई और बाद में उन्हें वाराणसी की संस्कृत विद्यापीठ में भेजा गया। आजाद का बचपन आदिवासी इलाकों में बीता था, यहां से उन्होंने भील बालकों के साथ खेलते हुए धनुष बाण चलाना व निशानेबाजी के गुर सीखे थे। बहुत छोटी मात्र 14-15 साल की उम्र में चन्द्रशेखर आजाद गांधी जी के असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए थे। इस आंदोलन से जुड़े बहुत सारे लोगों के साथ चन्द्रशेखर को भी गिरफ्तार कर लिया गया था। गिरफ्तारी के बाद कोड़े खाते हुए बार-बार वे भारत माता की जय का नारा लगाते रहे और जब उनसे उनके पिता नाम पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया था कि मेरा नाम आजाद है, मेरे पिता का नाम स्वतंत्रता और पता जेल है और तभी से उनका नाम चंद्रशेखर सीताराम तिवारी की जगह चंद्रशेखर आजाद बोला जाने लगा। इस गिरफ्तारी के बाद आजाद ने ब्रिटिशों से कहा था कि अब तुम मुझे कभी नहीं पकड़ पाओगे। एक घटना याद आ रही है। ब्रिटिश पुलिस से

बचने के लिए एक बार जब चन्द्रशेखर अपने एक मित्र के घर छुपे हुए थे। उस समय गुप्तचरों से सूचना मिलने पर ब्रिटिश पुलिस वहां पहुंच गई। चन्द्रशेखर के मित्र ने पुलिस से कहा कि चन्द्रशेखर यहां नहीं है पर पुलिस नहीं मानी और घर की तलाशी के लिए दबाव डालने लगी तो मित्र की पत्नी ने चन्द्रशेखर आजाद को एक देहाती धोती और अंगरखा पहनने को दिया और सिर पर साफा बंधवा दिया। वह टोकरे में कुछ अनाज तथा तिल के लड्डुओं को लेकर अपने पति से बोली-सुनो जी, मैं जरा अड़ोस-पड़ोस में लड्डू बांटकर आती हूं, तुम घर का ध्यान रखना और फिर ब्रिटिश पुलिस के सामने वह चन्द्रशेखर से बोली- अरे वज्र मूर्ख, तू क्या यहीं बैठा रहेगा। यह लड्डुओं की टोकरी अपने सिर पर रख और मेरे साथ चल। चन्द्रशेखर ने तुरंत सिर पर टोकरी उठाई और पुलिस को चकमा देकर मित्र की पत्नी के साथ किसान के भेष में घर से बाहर निकल गए। थोड़ा दूर पहुंचकर चन्द्रशेखर न लड्डुओं व अनाज से भरे टोकरे को एक मंदिर की सीढ़ियों पर रखा और मित्र की पत्नी को धन्यवाद देकर वहां से चले गए। आजाद ने देश की स्वतंत्रता के लिए भगत सिंह के साथ मिलकर भी अंग्रेजों को नाकों चने चबवा दिए थे। कहते हैं जैसा नाम वैसा काम। चन्द्रशेखर ने अपने नाम के आगे आजाद लगाया था और वे मरते दम तक आजाद ही रहे। एक बार इलाहाबाद में उनके होने की सूचना मिलने पर ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें और उनके सहकर्मियों को चारों तरफ से घेर लिया था।

एक मुलाकात

हृदय की गठरी खोल
अपने लिए चुनने है
कुछ पल
जिसमे सिर्फ
मैं होऊ
जीवन के
उतार चढ़ावों
बीच गिरने सम्भलने
के चक्कर में
नही मिला वक़्त
कभी अपने लिए
जिम्मेदारियों ने
बाँध ली साँसे
जिसे जीना चाहिए
था भरपूर
वो
जिंदगी गुजरती
जा रही है
हर रोज थोड़ी
थोड़ी
वक्त नही रुकेगा
कभी पर
अब मैं नही दौड़ूंगी
जिऊंगी अपने
लिए
सबसे दूर होकर
करनी है खुद से
एक मुलाकात

-कल्पना खूबसूरत ख़याल

पत्रिका के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण

घोषणा

फार्म-4

1. प्रकाशन का स्थान	-	ग्वालियर
2. प्रकाशन अवधि	-	मासिक
3. मुद्रक का नाम	-	भरत सिंह चौहान
4. क्या भारत के नागरिक हैं यदि विदेशी हैं तो मूल देश का पता	-	भारतीय नागरिक अप्रयोज्य दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास गोवर्धन कॉलोनी भिण्ड रोड गोला का मंदिर ग्वालियर म.प्र.
5. प्रकाशक का नाम	-	भरत सिंह चौहान
क्या भारत के नागरिक हैं यदि विदेशी हैं तो मूल देश का पता	-	भारतीय नागरिक अप्रयोज्य दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास गोवर्धन कॉलोनी भिण्ड रोड गोला का मंदिर ग्वालियर म.प
6. सम्पादक का नाम	-	भरत सिंह चौहान
क्या भारत के नागरिक हैं यदि विदेशी हैं तो मूल देश का पता	-	भारतीय नागरिक अप्रयोज्य दीपू इलेक्ट्रोनिक्स हनुमान मंदिर के पास गोवर्धन कॉलोनी भिण्ड रोड गोला का मंदिर ग्वालियर म.प
7. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार हों।		**भरत सिंह चौहान**

मैं भरत सिंह चौहान एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक मार्च 2020

भरत सिंह चौहान
सम्पादक/प्रकाशक

जिले में किसी भी अपराधी को बख्शा नहीं जाएगा: एसपी नागेन्द्र सिंह

भिंड। भिंड के नवागत पुलिस अधीक्षक नागेन्द्र सिंह ने भिंड जिले की कमान संभाल ली है कमान संभालते ही उन्होंने कहा कि जिले में किसी भी अपराधी को बख्शा नहीं जाएगा और ईनामी आरोपियों पर पुलिस कड़ा शिकंजा कसेगी और जिले में शांति व्यवस्था बनाए रखना उनकी पहली प्राथमिकता है भिंड जिले की कमान संभालते के बाद पुलिस अधीक्षक ने पदस्थ पुलिस स्टाफ से परिचय प्राप्त किया उसके बाद जिले का जायजा लिया पुलिस अधीक्षक नागेन्द्र सिंह एक ईमानदार और स्वच्छ छवि के पुलिस अधिकारी के साथ साथ समाजसेवक भी बहुत अच्छे हैं जिसके चित्रण कई बार श्योपुर की जनता को देखने को प्राप्त हुए हैं। इससे पहले नागेन्दग सिंह श्योपुर जिले में पदस्थ थे जहां उनके नाम कई कीर्तिमान हैं श्योपुर में उन्हें जनता का भरपूर स्नेह प्राप्त हुआ और अब भिंड जिले में उनके पदस्थ होने से भिंड जिले की जनता में हर्ष की लहर है। पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना प्रभारियों को कड़े निर्देश देते हुए कहा है कि किसी भी थाने की सीमा में अगर अपराध होता है तो आरोपी के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जावे और जिससे जिले में शांति एवं अपराध मुक्त वातावरण बना रहे। इससे पहले जिले के एसपी का पद संभालने से पहले नागेंद्र सिंह दंदरौआ धाम में डॉक्टर हनुमान के दर्शन करने पहुंचे। दंदरौआ से भिंड आकर वे एसएएफ बटालियन स्थित समर हाउस गए। यहां से शाम को उन्होंने एसपी कार्यालय पहुंचकर एएसपी संजीव कंचन से एसपी का चार्ज लिया। वहीं भिंड से भोपाल ट्रांसफर हुए एसपी रूडोल्फ अल्वारेस ने बुधवार को अपना चार्ज एएसपी को दिया था। यहां बता दें, 2014 बैच के आईपीएस नागेंद्र सिंह भिंड से पहले श्योपुर जिले में एसपी का जिम्मा संभाल चुके हैं। जिले में प्रवेश से पहले उन्होंने ग्वालियर में एडीजी चंबल डीपी गुप्ता से मुलाकात की थी।

एसपी पहुंचे दंदरौआ धाम, लिया आशीर्वाद

भिण्ड। जिले के नवागत पुलिस अधीक्षक नागेन्द्र सिंह चार्ज लेने से पहले जिले के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल दंदरौआ धाम पहुंचे। उन्होंने डॉ. हनुमान के दर्शन कर पूजा-अर्चना की और श्रीश्री 1008 महामण्डलेश्वर महंत रामदास महाराज से आशीर्वाद लिया।

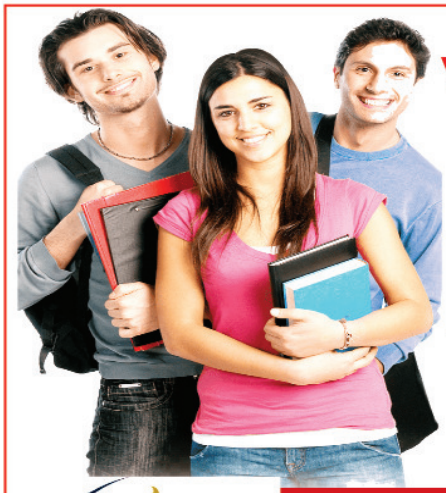

VISION 2030

अब अपनी पढाई को दो रफ्तार

*SSC/ बैंक/ रेलवे/MPPSC/UPSC/ POLICE/SI के साथ ही सभी तरह की COMPETITION CLASSES

फ्री में आप हमारा App "VISION 2030 डाउनलोड कर सकते हैं

अगर आप कोचिंग/स्कूल चलाते है तो अपनी छात्र संख्या बढ़ाने के लिये सम्पर्क कर सकते हैं

Vision 2030
THE FUTURE IS OURS TO SEE

फ्रेंचाइजी लेने के लिये सम्पर्क करें और हर माह 50 से 60000/- कमाना शुरु करें

HOME TUITION

Class:- 6th-12th हिन्दी मीडियम/इंग्लिश मीडियम/CBSE

MP/UP/GUJRAT/CG

BHIND/GWALIOR/DATIA/

संपर्क: ए-ब्लॉक 404 भाऊ साहब की पोतनिस मुरार रोड गोले का मंदिर ग्वालियर 9691937250

राम रोटी संग्रह कार्य के साथ साथ रक्तदान करने के लिये युवाओं को किया गया जागरूक

युवा जनकल्याण सेवा समिति टीम के सदस्यों ने लोगों को मदद पहुंचाना ही ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया गया है। जो कि किसी भी समय लोगों की मदद को तैयार रहते हैं। जिसमे युवा जनकल्याण सेवा समिति के सदस्यों द्वारा सबसे अहम काम ब्लड डोनेट को लेकर किया जाता रहा है। जिसमे लोगो को रक्तदान दान करके किसी जरूरतमंद के काम आ सके। साथ ही मरीजों को समय पर ब्लड उपलब्ध कराए जाने के लिए टीम सदस्य रक्तदान करते आ रहे हैं, इसी के साथ ही अस्पताल में जब भी किसी मरीज को ब्लड की आवश्यक्ता होती है तो सूचना मिलने पर टीम के सदस्य मौके पर पहुंचते हैं और ग्रुप का मिलान कर मरीज को ब्लड उपलब्ध कराते हैं।

युवा जनकल्याण सेवा समिति के सदस्य प्रदीप सिंह राजावत एवम मानवेन्द्र जादौन को जानकारी मिली किसी को रक्त की आवश्यकता है तो उनके द्वारा जरूरतमंद व्यक्ति को अपना रक्तदान किया जिससे कि उनकी जिन्दगी को बचाया जा सके जबकि कई बार ऐसा हुआ है कि शासकीय रेडक्रॉस से ब्लड आसानी से नहीं मिल पाता है। ऐसे में मरीजों के परिजन को परेशान होना पड़ता है। कभी ब्लड ग्रूप मैच नहीं होता है तो कभी ब्लड बैंक में संबंधित ग्रुप का ब्लड नहीं मिल पाता है। ऐसे में कई बार मरीजों की जान पर बन आती है। ऐसे ही मरीजों को समय पर ब्लड उपलब्ध कराए जाने के लिए ही युवा जनकल्याण सेवा समिति के सदस्यों ने रक्तदान दिए जाने की शुरुआत की। जिससे कई लोगों की जान भी बचाई जा सकी है। युवाओं द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में किए जा रहे इस पुनित कार्य को देखते हुए कई वरिष्ठ समाजसेवियों द्वारा भी उनका सहयोग किया जा रहा है। जिनके मार्गदर्शन के रूप में शैलेन्द्र सिंह भदौरिया एवम अजय सिंह भदौरिया की एक भूमिका रही युवाओं को जागरूक करने के लिये। और हमेशा युवाओं द्वारा लोगों की हर संभव मदद किए जाने का कार्य किया जाता रहा है इसके लिए युवाओं द्वारा अपने स्तर पर ही राशि एकत्रित की जाती है और इसी राशि से गरीब बस्तियों एवम बेसहारा लोगो के बीच पहुंचकर खुशियां बांटी जाती रही हैं। इसी के साथ ही युवाओं द्वारा मलिन बस्तियों में पहुंचकर जरूरतमंदों को उनकी जरूरत के हिसाब से सामग्री भी उपलब्ध कराई जा रही है। साथ ही बच्चों को भी अध्ययन सामग्री का वितरण भी किया जाता रहा है।

युवा जनकल्याण सेवा समिति सदस्यों द्वारा राम रोटी संग्रह कार्य मुहिम भी चलाई जा रही है जिसका उद्देश्य प्रत्येक घर से दो दो रोटी एकत्रित करके गऊ शाला एवम रोड पर घूम रही बेसहारा गायों को रोटी खिलाई जा सके जिससे कि वो पन्नी खाने पर मजबूर न हो।

जिसके साथ ही लोगो को गऊ सेवा में जोड़ने के लिये भी प्रयास कर रहे है जिससे कि आम जन गऊ सेवा से जुड़े है और गऊ माता की स्तिथि में सुधार ला सके समिति के सदस्य लंब्बे समय से ग्वालियर के वार्ड नम्बर 7 से रोटियां इकट्ठी कर गोले का मन्दिर स्तिथ गऊ शाला में लगभग 6 से 7 महीने से निरन्तर अपनी सेवाये दे रहे है जिसमे इकट्ठी रोटियों को टीम के सदस्य अपने हाथों से गऊ माता को खिलाते है अब तक लगभग टीम के द्वारा 450 से 500 घर जोड़ लिये है जिनके माध्यम से टीम के सदस्य दो दो रोटियाँ लेते है। इन सभी कार्यो में टीम के कई सदस्य सहयोग कर रहे है जैसे- प्रदीप सिकरवार, शिवनाथ सिंह कुशवाह, संतोष शर्मा, अवदेश शर्मा, राम लखन सिकरवार, सतेंद्र राजावत, सोनू चौहान, हेमन्त भदौरिया, मानवेन्द्र तोमर, सुरजीत राजावत, शिवम भदौरिया, मानवेन्द्र जादौन, प्रदीप राजावत, विनय तोमर, आशु राजावत, मनीष चंदेल, राज तोमर, नैतिक सिकरवार, कुणाल चंदेरिया, मोहित जादौन, आकाश सेंगर, हेमन्त त्यागी आदि

शासकीय स्नातक महाविद्यालय आलमपुर का मंत्री पटवारी ने किया लोकार्पण

आलमपुर में नवीन भवन के लोकार्पण से विद्यार्थियों को बेहतर सुविधा प्राप्त होगी: गोविंद सिंह

(अर्पित गुप्ता) आलमपुर

भिण्ड जिले के आलमपुर में 6.5 करोड़ की लागत से नवनिर्मित शासकीय महाविद्यालय का लोकार्पण उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी द्वारा किया गया।वहीं के लोकार्पण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद मंत्री जीतू पटवारी ने महाविधालय में स्थापित दो लाख की लागत से स्थापित गांधी प्रतिमा व स्तंभ पर मंच से नाराजगी जाहिर करते हुए निम्नस्तरीय प्रतिमा की जांच कर कार्यवाही के लिये कलेक्टर छोटे सिंह व अतिरिक्त संचालक को दिये निर्देश।तो वहीं महाविद्यालय के प्राचार्य ने मंत्री के सामने प्रतिमा के मामले में अपने को बताया निर्दोष बताते हुए पूरा मामला जनभागीदारी अध्यक्ष पर डाल दिया और कहा कि जनभागीदारी अध्यक्ष ने लगवाई प्रतिमा।वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सहकारिता मंत्री डॉ.गोविन्द सिंह ने मंच से कहा कि मै अपने क्षैत्र के महाविद्यालय को सुधारने में रहा नाकाम इसलिए उच्च शिक्षा मंत्री आप ही यहां की व्यवस्थाए सुधारें।यहां बता दें कि महाविद्यालय की व्यवस्थाओं से काफी नाराज नजर आये सहकारिता मंत्री डॉ.गोविन्द सिंह ने उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी से कहा कि प्राचार्य पर करो कार्यवाही या फिर आप भोपाल ले जाओ।साथ ही छात्राओं से संवाद के जरिये महाविद्यालय की व्यवस्थाओं के हाल जाने और जल्द सुधार का भरोसा भी दिलाया।कार्यक्रम के अंत मे महाविद्यालय प्राचार्य ने महाविद्यालय में? बीएससी सेल्फ फाईनेंस खत्म कर शासन स्तर से चलबाने का किया आग्रह।लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान विधायक कुणाल चौधरी,विधायक घनश्याम सिंह व युवा कांग्रेस नेता अनिरुद्ध प्रताप सिंह प्रमुख रूप से रहे मौजूद।।

कार्यक्रम के दौरान आखिर क्यों आगबबूला हुए जीतू पटवारी..?

आलमपुर में 6.5 करोड़ की लागत से निर्मित शासकीय महाविद्यालय का लोकार्पण किया गया जिस दौरान महाविद्यालय परिसर में ही लगभग 2 लाख की लागत से बने महात्मा गांधी स्मारक का भी लोकार्पण किया गया।अचम्भे की बात तो यह है कि जिस स्मारक का लोकार्पण किया गया उसमे असल मे भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी 25 प्रतिशत भी समझ ही नही आ रहें हैं।जिसके चलते उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी आगबबूला हुए और मौके पर ही प्रतिमा की निम्नस्तरीय जांच कर कार्यवाही करने के लिए भिण्ड कलेक्टर छोटे सिंह व अतिरिक्त संचालक को निर्देश भी दे दिए।तो वहीं महाविद्यालय की व्यवस्थाओं ने नाराज कैबिनेट मंत्री डॉ.गोविन्द सिंह ने भी इस मामले पर नाराजगी जाहिर करते हुए मंत्री जीतू पटवारी से कहा कि मैं अपने क्षेत्र की व्यवस्थाएं सुधारने में असफल रहा।उन्होंने कहा कि या तो आप प्राचार्य पर कार्यवाही करो या फिर इन्हें भोपाल ले जाओ तो वहीं महाविद्यालय प्राचार्य ने महाविधालय में स्थापित किये गये गांधी स्मारक के बारे में मौके पर ही अपनी सफाई देते हुए कहा कि प्रतिमा जनभागीदारी अध्यक्ष द्वारा स्थापित कराई गई है।कार्यक्रम के दौरान जब मंत्री जीतू पटवारी ने छात्र छात्राओं से संवाद किया तो पता चला कि महाविद्यालय की व्यवस्थाये काफी डागमडोल हैं जिसके बाद उन्होंने व्यवस्थाओ को जल्द से जल्द सुधारने का आश्वासन भी

पूर्णाहूतियों के साथ सम्पन्न हुआ 108 कुंडीय विशाल शिवशक्ति सहस्त्रचंडी महायज्ञ

(मोहित गोस्वामी) दबोह

भिण्ड जिले के दबोह क्षेत्र के मुरावली में श्री नारसिंह सरकार मुरावली पर 12 फरवरी से 21 फरवरी तक चल रहा 108 कुंडीय विशाल श्री शिवशक्ति एवम सहस्त्रचंडी महायज्ञ का समापन पूर्णाहूतियो के साथ हुआ सम्पन्न।महायज्ञ के दौरान विधिविधान से वेदाचार्य डॉ.भैरवदत्त शास्त्री ने मन्त्र उच्चारण के साथ महायज्ञ को समपन्न कराया।वहीं महायज्ञ के अंतिम दिन के दौरान चल रही कथा के दौरान कथा वाचक पँ.श्री मिथलेश दास जी महाराज श्रीधाम वृन्दावन ने कहा कि किसी भी मनुष्य को अच्छा या बुरा उसकी बुद्धि ही बनाती है। अच्छी सोच रखने वाला मनुष्य जीवन में हमेशा ही सफलता पाता है।बुरी सोच रखने वाला मनुष्य कभी उन्नति नहीं कर पाता मनुष्य की बुद्धि उसके स्वभाव को दर्शाती है।सदबुद्धि वाला मनुष्य धर्म का पालन करने वाला होता है और उसकी बुद्धि कभी गलत कामों की ओर नहीं जाती। अतः हमेशा सदबुद्धि का पालन करना चाहिए और समय निकालकर भगवान का नाम जरूर लेना चाहिए क्यों कि भगवान की भक्ति से इंसान जो पा सकता है वह किसी भी भक्ति से नही पा सकता।वही महायज्ञ के नौवें दिन मप्र शासन के मंत्री डॉ.गोविंद सिंह मुरावली पहुंचे जहां पहुंचकर उन्होंने सर्वप्रथम नारसिंह महाराज के दर्शन किए तदोपरांत महायज्ञ की व्यवस्थाये देखी।महायज्ञ में पहुंचकर उन्होंने इस विशाल आयोजन के लिए आयोजन समिति व मुराबली सरपँच जितेंद्र सिंह कौरव के साथ हर उस कार्यकर्ता को बधाई दी जिन्होंने महायज्ञ में अपना अमूल्य योगदान दिया।यहां बता दें कि महायज्ञ में रोजाना शुद्ध घी का विशाल भंडारा चल रहा था जिसके दौरान नवे दिन का भण्डारा मंत्री डॉ.गोविन्द सिंह के द्वारा दिया गया।जिसमें हजारो की सँख्या ने धर्मप्रेमी बन्धुओ व सन्त महात्माओ ने प्रसादी ग्रहण की।यहां बता दे कि दबोह क्षेत्र के नारसिंह सरकार सिद्ध गुफा मुरावली में दैविक,भौतिक,तापिक बढ़ाओ को नष्ट करने के लिए विश्व शांति जनकल्याण शांति के लिए 12 फरवरी से 21 फरबरी तक 108 कुंडीय विशाल शिवशक्ति एवं सहस्त्रचंडी महायज्ञ चल रहा था।वहीं इस महायज्ञ में रात्रि में रामलीला का भी मंचन किया जा रहा रहा था,साथ ही बता दे कि महायज्ञ में यज्ञाचार्य प.श्री हरिहर जी त्रिवेदी,कथावाचक प.श्री मिथलेशदास जी महाराज श्रीधामवृंदावन औरेया वाले,वेदाचार्य डॉ.श्री भैरवदत्त त्रिवेदी है वहीं पारिक्षतो में प्रधान पारीक्षत रीनुदेवी-रणजीत सिंह कौरव लम्बरदार मुरावली, देवीपुराण पारीक्षत सुमनदेवी-रुस्तम सिंह कौरव लंबरदार अमाह,सहस्त्रचण्डी पारीक्षत रामसखी-अनन्त सिंह चौधरी अमाहा-मुरावली,रुद्राभिषेक पारीक्षत गिरजा देवी-जगमोहन शर्मा फरदुआ यज्ञ में पारीक्षत बनाये गए है।वहीं नारसिंह महाराज के चरणसेवक के रूप में रामखिलौने सोनी भगत जी व संजू भगत सिंह शामिल

मुरावली महायज्ञ में पहुंचे मंत्री डॉ.गोविन्द सिंह

14 वर्ष की आयु में दिया था वीरता का प्रमाण

मरते दम तक अपने लोगों के लिए लड़ने वाले वीर योद्धा थे हरी सिंह नलवा

हरी सिंह नलवा एक ऐसे शूरवीर का नाम है, जिसके भय से अफ़गानी दुश्मन पूरी तरह आतंकित थे. वह महाराजा रणजीत सिंह की सेना के मुख्य स्तम्भ माने जाते थे. महज 14 वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी वीरता का ऐसा प्रमाण दिया कि उन्हें 'बाघ मार' तक कहकर बुलाया गया.सरदार हरि सिंह नलवा का जन्म गुजरांवाला, पंजाब में 28 अप्रॅल, 1791 को हुआ था। इनके पिता का नाम गुरदयाल सिंह और माता का नाम धर्मा कौर था। प्रसिद्धि महाराजा रणजीत सिंह के सेनाध्यक्ष थे। जिस उम्र में बच्चों को खिलौनों का शौक होता है, उस उम्र में हरी सिंह ने अस्त्र शस्त्र, मार्शल आर्ट और घुड़सवारी की शिक्षा पूर्ण कर ली थी.

महज 14 वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी वीरता का ऐसा प्रमाण दिया कि उन्हें 'बाघ मार' तक कहकर बुलाया गया.एक बार शिकार के दौरान एक खूंखार बाघ ने महाराजा की सेना पर हमला कर दिया. बाघ का यह हमला हरी सिंह के ऊपर हुआ था, जिसकी वजह से उनका घोड़ा मारा गया. हमला इतना अप्रत्याशित था कि हरी सिंह को अपनी तलवार निकालने का मौका भी ना मिला.

एक खूंखार बाघ उन्हें दबोचने के लिए सामने मुंह खोले खड़ा था. ऐसी स्थिति में बड़े से बड़े वीर का साहस एक क्षण के लिए डोल जाना स्वभाविक होता है, परन्तु हरी सिंह बाघ के सामने खाली हाथ ऐसे खड़े थे, जैसे उन्हें पता ही ना हो कि डर किस बला का नाम है. उन्होंने बड़ी फुर्ती के साथ अपने दोनों हाथों

से बाघ का जबड़ा पकड़ लिया और देखते ही देखते अपने हाथों से उसका मुंह चीर डाला. चौदह वर्ष के बालक द्वारा इस तरह का साहसिक कार्य सबके लिए हैरान कर देने वाली बात थी. कहते हैं कि इस घटना के बाद हरी सिंह को 'बाघ मार' व नलवा नाम से जाना जाने लगा.बाघ मारने के कारण महाराजा के मुख से अचानक निकला अरे तुम तो राजा नल जैसे वीर हो। तभी से नल से हुए नलवा के नाम से वे प्रसिद्ध हो गये। युद्ध के मैदान में हरी सिंह के दोनों हाथों में केवल तलवारें ही नहीं, अपितु दुश्मनों का काल झूलता था. उनके एक वार से दुश्मन का सिर धड़ से अलग हो जाता था. हरी सिंह नलवा ने 1813 में अटक, 1814 में कश्मीर, 1816 में महमूदकोट, 1818 में मुल्तान, 1822 में मनकेरा, 1823 में नौशहरा आदि समेत 20 से अधिक युद्धों में दुश्मनों के पसीने छुड़ाते हुए ऐतिहासिक विजय प्राप्त कीं. एक अंग्रेज ने अपनी किताब में हरि सिंह के बारे में लिखा था कि जब राजा रणजीत सिंह जी के साथ अंग्रेजों की संधि हो रही थी, तब राजा के साथ सिर्फ हरि सिंह ही थे, उनके डर से अंग्रेजों ने राजा को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया, उन्हें डर था कि अगर वीर और साहसी हरि सिंह ने पूरी ताकत से एक मुक्का मार दिया तो उनका घोड़ा गिर जाएगा। जब हरी सिंह की डेथ हुई थी, तब उसके बाद भी, जिस किले में वह रहते थे, वहां उनके कपड़े सुखाए जाते थे, ताकि दुश्मनों में डर बना रहे और वह हमला न करें। इनके बाद किसी और योद्धा ने अफगानिस्तान पर हमला नहीं किया था। खैबर दर्रे से होने वाले इस्लामिक आक्रमणों से देश को मुक्त किया। 30 अप्रैल 1836 में जमरौद (अब पाकिस्तान में है) की जंग में लड़ते हुए शहीद हुए। नोशेरा के युद्ध में हरि सिंह नलवा ने महाराजा रणजीत सिंह की सेना का कुशल नेतृत्व किया था। रणनीति और रणकौशल की दृष्टि से हरि सिंह नलवा की तुलना दुनिया के श्रेष्ठ सेनानायकों से की जा सकती है।इस तरह से हरी सिंह नलवा ने मृत्यु को प्राप्त कर लेने के बाद भी ना केवल जमरूद तथा पेशावर को बचाया, अपितु अफगानियों को उत्तर भारत की सीमाओं से भी खदेड़ दिया. मरते दम तक अपने लोगों के लिए लड़ने वाले हरी सिंह नलवा जैसे शूरवीर को कोटि-कोटि नमन.

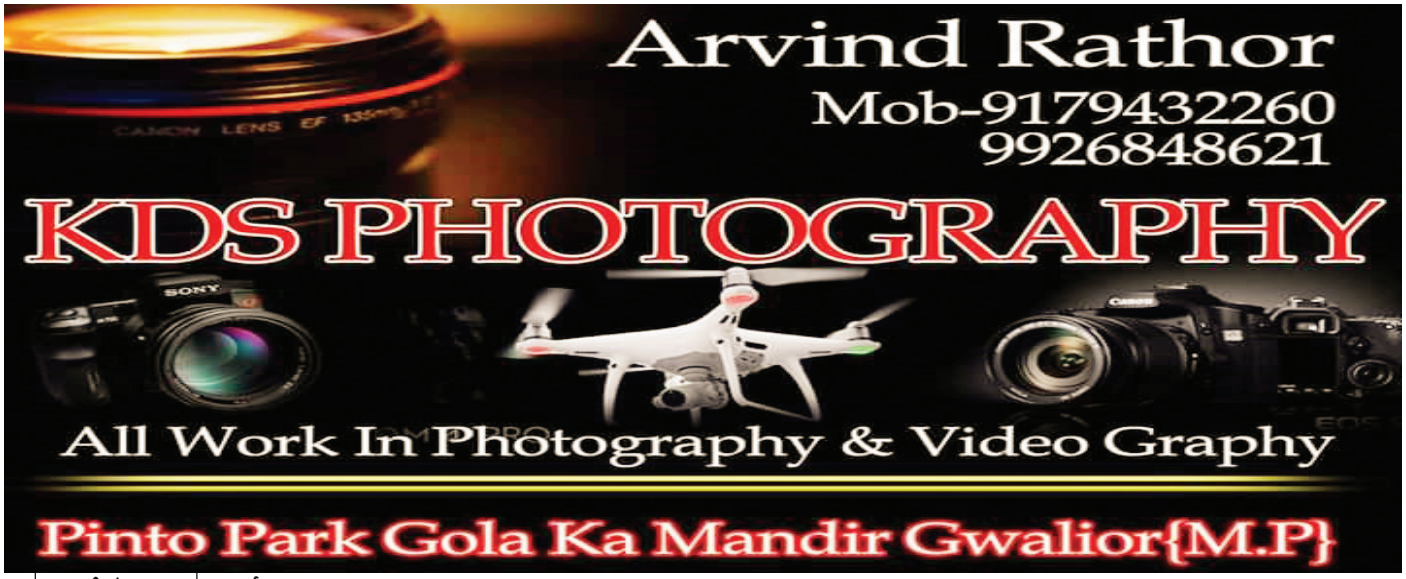

नारी सशक्तीकरण का सही अर्थ

निक्की शर्मा रश्मि
मुंबई (महाराष्ट्र)

प्रकृति का बनाया एक सुकोमल शीतल स्पर्श शक्ति का अपार भंडार के रूप में एक सुंदर रचना है नारी। नारी आज समाज के हर क्षेत्र में काम कर रही है आज वह किसी का मोहताज नहीं है। फिर भी घर समाज में उन्हें समझौता करना ही पड़ता है दोहरी जिम्मेदारी में घिरी कई बार असमर्थता जताते हुए भी विभिन्न परिस्थितियों में अपने आपको ढाल लेती है।समय बदला सोच बदली है आज नारी सशक्तिकरण मैं अपने आपको साबित कर खड़ा कर लिया है। नारी को भी पूरी तरह से समानता का अधिकार शिक्षा, संस्कृति, धार्मिक स्वतंत्रता,पुरुषों के समान अधिकार मिल चुके हैं। इसका उल्लेख संविधान में भी है शिक्षा, स्वास्थ्य,रोजगार, शोषण पर नियंत्रण और शोषण पर आवाज उठाना भी सिख गयी है।हर जगह नारी सशक्त हो रही है खुलकर आवाज उठाने में लगी है। संविधान में भी देखे तो पुरुषों की तरह नारी को भी समान अधिकार दिए गए हैं। जहां पहले नारी अपनी दुर्दशा पर रोने के अलावा कुछ नहीं कर सकती थी आज पूरी तरह आवाज उठाने और अपना हक जताने से पीछे नहीं हैं।आज हर मुकाम पर अपने आप को साबित कर चुकी है।

भारतीय संस्कृति में भी नारी को बहुत ही सम्मान और महत्व दिया गया है । धरती पर नारी के अनेक रूप हैं। नारी को दुर्गा , काली, चंडी एवं सरस्वती के रूप में मानने वाले लोगों की मानसिकता कहाँ लुप्त हो गई है समझ नहीं आ रहा। नारी की स्थिति पहले की तुलना में काफी हद तक सुधार हुआ है । नारी शिक्षा को बढ़ावा मिलने से प्रगति पथ पर अग्रसर होती रही है। राजनीति हो या व्यवसाय हर जगह नारी की भागीदारी है । नारी के बिना इस संसार में कुछ भी नहीं है । इसके बिना, यह सृष्टि अधूरी है।

भारतीय समाज को हमेशा पुरुष प्रधान माना गया । लेकीन अब 21वीं सदी में पूरी तरह से बदलाव आया है । आज नारी पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं, फिर भी जो सम्मान, जो इज्जत नारियों को मिलनी चाहिए वह मिल नहीं रही है। जिस तरह के अमानवीय व्यवहारों से वह गुजरती है उसका अंदाजा भी शायद लगाना मुश्किल है। एक तरफ हम उन्हें आगे बढ़ाने की बात करते हैं और दूसरी तरफ अभद्रता की हद पार करते हैं।आजकल महिलाओं,छोटी-छोटी बच्चियों के साथ अभद्रता की सारी सीमाएं टूट गई है।आज एक भी दिन ऐसा नहीं जाता जब हम बलात्कार जैसी अभद्रता की घटना नहीं सुनते हैं। 4 महीने की बच्ची से लेकर महिलाएं तक सुरक्षित नहीं है।आज फिर इक्कीसवीं सदी में पहुँचकर भी समाज की सोच नहीं बदल रही।अपने ही घर में वह सुरक्षित नहीं होती घरों में भी शोषित हो रही है।समाज किस ओर जा रहा एक बार चिंतन करके देखें ।कानून नहीं हमें सोच बदलनी होगी,लड़कों को सिखाना होगा सम्मान करना नारी का। समाज के सभी लोगों और कानून-व्यवस्था से आगे अपेक्षा होगी लाचारी,बेबसी और तड़प से नारी बाहर निकल सके एक समय ऐसा लाएं.. जहां बच्चियां, औरतें बेखौफ होकर घूमे।आशा है एक सम्मान ,बेखौफ, आजादी और बेवाकपन से जीने का अधिकार जरूर मिलेगा। खुद को बदलें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें भारतीय संस्कृति में नारी के महत्व और सम्मान को बताएं समझाएं ।मां,बहन और बेटीयों के पवित्र रिश्ते को बताएं।मानसिकता बदलेगी तभी सब कुछ बदलेगा।नजरिया बदलें.. सोच बदलेगी.. तभी गंदी मानसिकता से आजादी मिलेगी।बच्चीयों ,महिलाओं को सम्मान देना बचपन से बतलायें तभी सोच अच्छी रहेगी सम्मान नारी के प्रति रहेगा।नयी सोच नया बदलाव लाएं । नारी और भी सशक्तिकरण की तरफ कदम आगे बढ़ा पाएगी।नारी पुरी तरह सशक्त हो उठेगी बस जरूरत है समाज में थोड़े से बदलाव की एक और पहल की।

क्या इसको जीना कहते हैं

रीना गोयल (सरस्वती नगर)
हरियाणा

भड़क रही सीने में पल- पल ,आग नफरतों की यह कैसी ।
दुखी हृदय सब देख विकल है ,क्या इसको जीना कहते हैं ।
भ्रष्ट हो गयी राजनीति है , भूल चुकी ईमान तभी ये,
क्यों विनाश की ओर चले हैं,भ्रमित हुए इंसान सभी यें ,
होली खेलें चलो रक्त से ,चौड़ा कर सीना कहते हैं ।।
दुखी हृदय सब देख विकल है ,क्या इसको जीना कहते हैं।।
चेहरे पर चेहरा रख घूमें,हैवानों की भीड़ बढ़ी अब,
अस्मत लुट जाए अबला की ,क्या जाने किस दुखद घड़ी रब ,
वस्त्रहीन कर जला जिस्म कर ,रसिक ज़रा पीना कहते हैं ।।
दुखी हृदय सब देख विकल है ,क्या इसको जीना कहते हैं।।
कैसी ये आजादी पायी ,क्या अब झूमूं नाचूँ गाऊं ,
जाति धर्म टकराव देखकर ,या रब जिंदा ही मर जाऊं ,
कदर गँवा दी वही देश जो गौरों से छीना कहतें हैं ।।
दुखी हृदय सब देख विकल है ,क्या इसको जीना कहते हैं।।

किताबें दिल और दिमाग को रौशनी देती हैं?

बालक ईश्वर की बनाई वह अनुपम कृति है, जिससे कायम है जीवन धारा, परम्पराएं, संस्कृति और शाश्वत मूल्य। यह अनुपम कृति जितनी सुकोमल हैं उतनी ही जिज्ञासु भी। यही कारण है कि बालमन सबसे अधिक संवेदनशील होता है।बालक प्रकृति से कोमल होता है। वह किसी प्रकार की क्रूरता और प्रतिकूलता को सहन नहीं कर सकता। अपने आस- पास हो रही घटनाओं से सबसे पहले जो प्रभावित होता है, यही बाल मन। आम व्यक्ति आने वाले कल के बारे में कुछ नहीं सोच पाता। पर वह यह जानता है कि आने वाले कल को कौन थामें हैं। आज का बालक कल का कर्णधार बन जायेगा। स्पष्टम है हमारा वर्तमान हमारे भविष्य को थामें हुए है। आज के बच्चो में कल का भविष्य निहित है।अतः बच्चो का संसार सपनो का संसार होता है। उसकी ऊर्जा अवरुद्ध नहीं होती। कभी खत्म न होने वाले शिक्षा के एकांगी पथ पर वे सदा चलते रहते हैं। बच्चे कभी आलसी नहीं होते।बच्चे जब भी मुस्कराते हैं तो अच्छे लगते हैं।

राजकुमार जैन राजन
आकोला (चित्तौड़गढ़),
राजस्थान 98282 19919

बच्चो का संसार हम सब एक हैं का संसार है। नाम, रूप, जाति, धर्म के भेद से मुक्त उनकी हंसी सबको आनन्दित करने वाली होती है। कहा भी जाता है, अ चाइल्ड इज फादर ऑफ द नेशन । किसी भी देश की सुरक्षा, सार -संभाल और खूबसूरती उस देश के बच्चों के सपनो व संकल्पों में बसती हैं।

आज भौतिकवादी युग में माता -पिता बालक को इंसान बनाने की जगह मशीन बनाने यानि उसे संस्कारित बनाने की अपेक्षा बौद्धिक व व्यवसायिक बनाने में ज्यादा लगे हुए हैं। साइबर दुनिया के इस प्रतिस्पर्धी युग में बच्चे केवल विकास की दिशा में ही उड़ान भरते और नये - नये सपने देखते हैं। डिजिटल दुनिया के बढ़ते प्रयोग ने बालकों को एकाकी, संस्कारहीन, आक्रोशी व स्वछंद बना दिया है। बच्चों के विकास का आधार है ज्ञान अर्थात अच्छा साहित्य और घर का अच्छा वातावरण। यदि हम समाज और देश को संस्कारवान बनाना है तो भावी पीढ़ी यानि बालकों में संस्कारों का

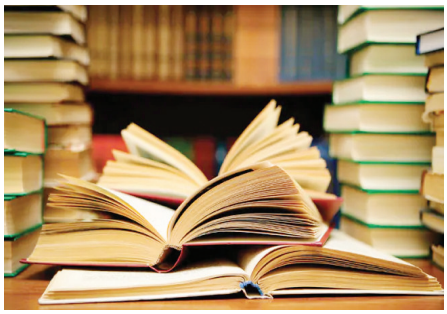

निर्माण करना अति आवश्यक है। संस्कारों का बीजारोपण सद्साहित्य से ही हो सकता है न कि डिजिटल किताबों (ई बुक्स) से।

व्यक्ति का जीवन क्षणिक या कुछ वर्षों का हो सकता है, लेकिन साहित्य का, किताब का जीवन छोटा या बड़ा नहीं होता। वह हमेशा जीवित रहता है। किताबें अस्तित्व में आने के बाद समाज की धरोहर बन जाती हैं। आज साहित्यिक पुस्तकों, पत्रिकाओं के पठन -पाठन में कमी आ रही है, जो सांस्कृतिक विकलांगता पैदा करने के साथ- साथ समाज के प्रति लोंगों की संवेदनशीलता तथा भावनात्मक जुड़ाव को भी क्षरित कर रहा है। किताबें हमारे दिल और दिमाग को रौशनी देती है। हमें स्वयम किताबों की और लौटना चाहिए तथा बच्चों को अधिकाधिक किताबें देकर उनमें पठन- पाठन की रुचि को जागृत करना चाहिए।

हमें बालकों को आशा और विश्वास देना है, उन्हें अंधेरे में भटकने के लिए नहीं छोड़ देना है। बच्चों को ही उपयुक्त साहित्य नहीं देना है, बल्कि उसके अभिभावकों को भी बाल साहित्य, उसकी उपादेयता तथा बालक के स्वस्थ जीवन निर्माण में उसके महत्व से भी परिचित कराना है। आज के इस भागते युग में न तो अभिभावकों के पास समय है, न ही बच्चों के पास। हमें इस प्रकार का बाल साहित्य बच्चों के लिए उपलब्ध करवाना है जो बच्चों को दुनिया मे जीने की शक्ति और साहस दे। बच्चों को जीवन के यथार्थ से परिचित करवाकर आने वाली जिंदगी के लिए तैयार करने का संबल अच्छी किताबों से प्राप्त होता है। बालकों के साहित्य में वास्तविकता के साथ -साथ एक आशा की किरण भी उनको दिखाई दे, जो उन्हें अंधेरों में भटकने से रोककर सही दिशा की ओर जाने के लिए इंगित कर सके। चहुं ओर फैले निराशा के अंधकार से हटकर हमें अपनी सोच को कुछ धूप दिखानी होगी। आज का समाज कितना विषैला हो रहा है ? भ्रष्टाचार की सुरंगें कदम -कदम पर बिछी हैं। वर्ग, धर्म, जाति के नाम पर राजनीति, प्रशासन और समाज बंट रहे हैं - ये सारी विभीषिकाएँ बालकों के सामने हैं और हम सब जानते हैं कि भविष्य का समाज इससे भी बदतर होगा। तब क्या हमारा बाल साहित्य , बच्चों को वर्तमान और भविष्य के लिए कोई सोच, कोई दिशा दे रहा है? क्या हम उत्कृष्ट बाल साहित्य बच्चों को उपलब्ध करा पा रहे हैं ? जरूरत है जब तक बच्चे अपना साहित्य नहीं ले सकते, तब तक हमें ही उनका साहित्य उन तक पहुंचाना होगा। यही उनके जीवन की बुनियाद होगी, जिसपर उनके सबल कंधों का, सुदृढ़ विचारों का, देश भक्ति, राष्ट्रीयता और नैतिकता का महल खड़ा होगा और तब इस उक्ति की सार्थकता सिद्ध होगी बच्चे राष्ट्र का भविष्य हैं।?

रंगों के त्यौहार होली की
हार्दिक शुभकामनाएं

DECENT WAY
TRADE WORLD
COME ONCE CHANGE YOUR WORLD

अरविंद पुरोहित
(प्रबंध संचालक) 7974614707

DECENT WAY TRADE WORLD PVT LTD

जातिवाद के खिलाफ एकजुट क्यों नहीं हो पाता है पूरा देश?

जातिवाद एक ऐसी प्रणाली है जो प्राचीन काल में अपनी जड़ें पाती है। यह वर्षों से अंधाधुंध चल रहा है और उच्च जातियों के लोगों के हितों को आगे बढ़ा रहा है। निम्न जाति के लोगों का शोषण किया जा रहा है और उनकी चिंताओं को सुनने वाला कोई नहीं है।

अंकुर सांगवान
भिवानी हरियाणा

भारतीय समाज को मोटे तौर पर चार जातियों के लोगों में वर्गीकृत किया गया है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण उच्च वर्ग के हैं। प्राचीन काल में, ये लोग पुरोहिती गतिविधियों में शामिल थे और लोग इनके लिए बहुत सम्मान रखते थे। क्षत्रिय शासक और योद्धा थे। उन्हें बहादुर और शक्तिशाली माना जाता था और केवल ब्राह्मणों के बगल में देखा जाता था।

वैश्य आगे आए। ये लोग खेती, व्यापार और व्यवसाय से जुड़े थे। शूद्र सबसे नीची जाति के थे। इस जाति से संबंधित लोग मजदूर थे। पाँचवीं जाति भी थी। इन लोगों को अछूत माना जाता था और उन्हें इंसानों की तरह भी नहीं माना जाता था। हालाँकि, लोगों ने इन दिनों अलग-अलग पेशों को संभाल लिया है लेकिन जाति व्यवस्था अभी भी मौजूद है। लोगों को अब भी उनकी जाति और उनके पेशे, प्रतिभा या उपलब्धियों के आधार पर आंका जाता है।जातिवाद केवल भारत में ही नहीं है, बल्कि कुछ अन्य देशों जैसे जापान, कोरिया, श्रीलंका और नेपाल में

भी प्रचलित है। भारत की ही तरह इन देशों में भी लोग इस बुरी व्यवस्था के प्रकोप का सामना कर रहे हैं।पुराने भारतीय जाति व्यवस्था की बहुत आलोचना की है। कई लोग इसके खिलाफ लड़ने के लिए आगे आए लेकिन इसे हिला नहीं सके। इस जघन्य सामाजिक कुरीति को दूर करने के लिए जातिगत भेदभाव के खिलाफ एक कानून स्थापित करने की सख्त जरूरत महसूस की गई। इस प्रकार, भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, जातिवाद पर आधारित भेदभाव पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया। भारत के संविधान ने इसे अपने संविधान में प्रतिबंधित कर दिया। यह उन सभी लोगों के लिए एक जोर से और स्पष्ट संदेश था जो निम्न वर्ग के लोगों के साथ बुरा व्यवहार करते थे।

जातिवाद वोट बैंक उपकरण

राजनेता चुनाव से पहले आम जनता से वोट मांगने के लिए विभिन्न स्थानों पर जाते हैं। यह प्रचार चुनावों के महीनों पहले शुरू होता है, जिसके दौरान राजनेता जनता को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए राजी करने और प्रभावित करने के लिए अपने सभी प्रयास करते हैं। हमारे राजनेता इस बात से भली-भांति परिचित हैं कि जब उनकी जाति और धर्म की बात आती है तो वे कितने संवेदनशील होते हैं। इस प्रकार, वे इसे अधिक से अधिक वोट प्राप्त करने के लिए एक माध्यम के रूप में उपयोग करते हैं। कई लोग, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में उम्मीदवार की योग्यता, अनुभव या स्थिति को संभालने की क्षमता का आकलन नहीं करते हैं और न ही उसे वोट देते हैं यदि वह उसी जाति से है क्योंकि यह उन्हें रिश्तेदारी की भावना देता है। राजनेता इसे जानते हैं और अधिक से अधिक वोट पाने के लिए इस कारक पर जोर देने की कोशिश करते हैं।

वैदिक अग्निहोत्र से कोरोना वायरस का प्रकोप समाप्त किया जा सकता है: डॉ. देव नारायण पाठक

नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय ,प्रयागराज के ज्योतिष,कर्मकाण्ड,वास्तुशास्त्र डिप्लोमा एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.देव नारायण पाठक ने बताया कि वेदों में वैदिक काल तथा आर्यों का संक्षिप्त परिचय के साथ ही साथ ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति,सूक्ष्मजीवों की व्याप्ति एवं वर्गीकरण,मानवस्वास्थ्य,रोगकारी क्रीमियों का जहाँ वर्णन किया गया है,वहीं उन रोगकारी क्रिमियों को नष्ट करने के लिए अग्निहोत्र विधि का भी वर्णन किया गया है।वैदिक काल में हमारे ऋषि वैदिक मन्त्रो के प्रयोग से समस्त क्रिमि जनित रोगों का शमन करते थे। वैदिक माइक्रोवायोलोजी पूर्णत-वैज्ञानिक है।इसी परिप्रेक्ष्य मे आज दिनांक 14/03/2020 को डॉ.पाठक ने कोरोना वायरस से बचाव के लिए छात्रों को नवग्रह की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालते हुए नवग्रह पूजन तथा अग्निहोत्र के लिए प्रशिक्षित किया। इस अवसर पर वनस्पति विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ.आदि नाथ ,डॉ.रमेश मिश्र,डॉ.प्रभात कुमार,डॉ.वीरेन्द्र मणि त्रिपाठी,श्री लव केश त्रिपाठी,बब्ली सिंह,प्रिती, प्रदीप,विजय पटेल,विघ्नेश तथा समस्त ज्योतिष,कर्मकाण्ड एवं वास्तुशास्त्र अध्येता उपस्थित रहे।

चम्बल

एक शापित नदी

भारत की एकमात्र शापित नदी चंबल नदी

चम्बल नदी भारत में बहने वाली प्रमुख नदयों में से एक है। चंबल नदी को वेदों में चरमूर्ति कहा गया है यह नदी मध्यप्रदेश के महू के जनाब आप पहाड़ी से निकलती हुई उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के मुरादगंज में यमुना नदी में मिल जाती है। इस नदी में पानी पूरे वर्ष बैठा रहता है। इसलिए इस नदी को बारहमासी नदी भी कहते हैं यह नदी वेदों के अनुसार शापित है पर वर्तमान में। देखा जाए तो यह। किसानों की खेती के लिए और गांव के लिए वरदान साबित हो रही है महाभारत। महाकाव्य के अनुसार राजा रंतिदेव के यज्ञ में जो। आरजे चमरा से खट्टा हो गई थी उसी से चंबल नदी का उद्भव होना माना जाता है।

चम्बल नदी भारत में बहने वाली प्रमुख नदयों में से एक है। चंबल नदी को वेदों में चरमूर्ति कहा गया है यह नदी मध्यप्रदेश के महू के जनाब आप पहाड़ी से निकलती हुई उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के मुरादगंज में यमुना नदी में मिल जाती है। इस नदी में पानी पूरे वर्ष बैठा रहता है। इसलिए इस नदी को बारहमासी नदी भी कहते हैं यह नदी वेदों के अनुसार शापित है पर वर्तमान में। देखा जाए तो यह। किसानों की खेती के लिए और गांव के लिए वरदान साबित हो रही है महाभारत। महाकाव्य के अनुसार राजा रंतिदेव के यज्ञ में जो। आरजे चमरा से खट्टा हो गई थी उसी से चंबल नदी का उद्भव होना माना जाता है। कालिदास के द्वारा रचित मेघदूत के पूर्व में के 47 वें श्लोक में कहा गया है कि

आराध्यैनं शदवनभवं देवमुल्लघिताध्वा,
सिद्धद्वन्द्वैर्जलकण भयाद्वीणिभिदैत्त मार्गः।
व्यालम्बेथास्सुरभितनयालंभजां मानयिष्यन्,
स्त्रोतो मूत्यभुवि परिणतां रंतिदेवस्य कीर्तिः।

चर्मण्वती नदी को वन पर्व के तीर्थ यात्रा अनु पर्व में पुण्य नदी माना गया है -

चर्मण्वती समासाद्य नियतों नियताशनः
रंतिदेवाभ्यनुज्ञातमग्निष्टोमफलं लभेत।

महाभारत में आश्वनदी का चर्मण्वती में, चर्मण्वती का यमुना में और यमुना का गंगा नदी में मिलने का उल्लेख है। बीहड़ का नाम सुनते ही चंबल की घाटियों की याद आ जाती है। इस बीहड़ का उदय कैसे हुआ? इसके बारे में आज सबको जानकारी देते हैं। यह बीहड बना चंबल नदी के तेज बहाव से । चंबल नदी मऊ ,भिंड, मुरैना, जालौन ,कानपुर ,देहात, राजस्थान के कोटा तक लगभग 995 किलोमीटर तक का सफर तय करती है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह भारत की एकमात्र ऐसी नदी है जो प्रदूषण मुक्त है। चंबल नदी एकमात्र ऐसी नदी भी है जिसे शापित नदी के नाम से भी जाना जाता है। महाभारत कथा के अनुसार मुरैना के पास इसी नदी के तट पर शकुनि ने जुए में पांडवों को हराकर। द्रोपती का चीर हरण किया था। तब द्रोपदी ने इस नदी को श्राप दिया था कि इस नदी के जल को जो पिएगा उसका अनिष्ट होगा। लेकिन इस नदी की गोद में फूलन देवी ,डाकू मलखान सिंह आदि कुख्यात डाकू फले - फूले हैं। इतिहासकारों के अनुसार चंबल बीहड़ का पहला डाकू सामंत चंड महासेन को बीहड़ों में तो तोमर सैनिकों ने 15 दिनों तक घेर रखा। बीहड़ में पानी ना मिलने पर और चंबल का पानी ना पी सकने के कारण वह साथियों समेत प्यास के कारण मारा गया। स्थानीय लोगों के अनुसार फूलन देवी ने भी प्यास से व्याकुल होकर आत्मसमर्पण किया था । इस नदी ने अपनी झोली से भारत को अनेक अभिनेता राज नेता और अफसर दिए हैं।

भगवान भोलेनाथ को स्थानीय भाषा में भोरमदेव कहा जाता है। इसलिए इस मंदिर को भोरमदेव नाम से जाना जाता है। इस मंदिर में खजुराहो की तरह ही कलाकृतियां बनी है। इसलिए यह मंदिर छत्तीसगढ़ का खजुराहो के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर के तीन प्रवेश द्वार हैं। मुख्य मंदिर को यहां स्थानीय लोग मण्डप कहते हैं क्योंकि मुख्य मंदिर का ढांचा मंडप की तरह बना है। इस मंडप की ऊंचाई 60 फीट है और चौड़ाई 40 फीट है।

छत्तीसगढ़ राज्य को ऐतिहासिक मंदिरों और महलों का गढ़ भोरमदेव मंदिर

छत्तीसगढ़ राज्य को ऐतिहासिक मंदिरों और महलों का गढ़ माना जाता है। इन्हीं ऐतिहासिक मंदिरों में है छत्तीसगढ़ का खजुराहो कहलाने वाला भोरमदेव मंदिर। भोरमदेव भारत के मध्य भाग के ख्याति प्राप्त मंदिरों में से एक है। यह मंदिर कबीरधाम जिले (कवर्धा) से उत्तर पश्चिम में 18 किलोमीटर छपरी नामक गांव में स्थित है। वही रायपुर से इसकी दूरी लगभग 145 किलोमीटर है। इस मंदिर का निर्माण स्थानीय लोगों व मंदिर में स्थित शिलालेखों के अनुसार 11 वीं सदी का बताया जाता है। इस मंदिर में भगवान भोलेनाथ का शिवलिंग स्थित है। भगवान भोलेनाथ को स्थानीय भाषा में भोरमदेव कहा जाता है। इसलिए इस मंदिर को भोरमदेव नाम से जाना जाता है। इस मंदिर में खजुराहो की तरह ही कलाकृतियां बनी है। इसलिए यह मंदिर छत्तीसगढ़ का खजुराहो के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर के तीन प्रवेश द्वार हैं। मुख्य मंदिर को यहां स्थानीय लोग मण्डप कहते हैं क्योंकि मुख्य मंदिर का ढांचा मंडप की तरह बना है। इस मंडप की ऊंचाई 60 फीट है और चौड़ाई 40 फीट है। इस मंडप के केंद्र में 4 खम्बे स्थित हैं और किनारे पर 21 खम्बे स्थित है। मंडप के गर्भ गृह में भगवान शंकर शिवलिंग

के रूप में विराजमान हैं। इस मंदिर के चारों तरफ मेकल की पहाड़ियां प्रकृति को अपने आप में समेटे हुए हैं। इस मंदिर के आकर्षण केंद्र मंदिर के अधिष्ठान में स्थित पंक्ति पद गज एवं सिंहों का अंकन किया गया है। गरुड़ासन लक्ष्मीनारायण भी इस मंदिर के आकर्षण का केंद्र है। यह मंदिर काफी हद तक कोणार्क के सूर्य मंदिर और खजुराहो के मंदिरों से समानता रखता है। शिलालेख के अनुसार इस मंदिर का निर्माण 11 वीं सदी में कलचुरी राजा पृथ्वी देव प्रथम के समकालीन अमरापुर के फड़ीवंशीय छठे नामक गोपाल देव के राज्य काल में माना जाता है । छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा प्रतिवर्ष मार्च माह के अंतिम सप्ताह से अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह तक भोरमदेव महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

भोरमदेव कैसे पहुंचे

भोरमदेव के पास रायपुर बिलासपुर और राजनांदगांव रेलवे स्टेशन है । इन रेलवे स्टेशनों से बस मार्ग के द्वारा कवर्धा पहुंचा जा सकता है और फिर कवर्धा से बस मार्ग के द्वारा भोरमदेव आसानी से जाया जा सकता है।

माता की आराधना का पर्व
चैत्र नवरात्रि

25 मार्च से नववर्ष; 178 साल पहले चैत्र नवरात्रि में गुरु ने किया था मकर में प्रवेश, 2020 में भी ऐसा ही होगा

बुधवार, 25 मार्च 2020 से चैत्र नवरात्रि शुरू रही है। इसी दिन कलश स्थापना होगी और हिन्दू नववर्ष शुरू होगा। इस तिथि पर गुड़ी पड़वा और श्री झुलेलाल जयंती भी मनाई जाएगी। इस नवरात्रि में एक विशेष संयोग बन रहा है। उज्जैन के ज्योतिषाचार्य पं. मनीष शर्मा के अनुसार नवरात्रि के बीच में ही गुरु अपनी राशि धनु से मकर में जाएगा। मकर गुरु की नीच राशि है। यानी नवरात्रि के मध्य में ही गुरु नीच का हो जाएगा। चैत्र नवरात्रि गुरुवार, 2 अप्रैल तक रहेगी। नवरात्र साल में मुख्यतः दो बार आते हैं, आश्विन मास में आने वाले नवरात्रों को शारदीय एवं दुर्गा नवरात्र तथा चैत्र मास में आने वाले नवरात्र वासंतिक, राम एवं गौरी नवरात्र कहलाते हैं। नवरात्र में प्रतिदिन देवी के विभिन्न रूपों का पूजन और उपाय करके माता को प्रसन्न किया जाता है। नवरात्र में पहले दिन से लेकर अंतिम दिन तक मां के किन रूपों की पूजा की जाती है इसके बारे में हम आपको यहां बता रहे हैं

शैलपुत्री

प्रथम नवरात्र में मां दुर्गा की शैलपुत्री के रूप में पूजा की जाती है। पर्वतराज हिमालय की पुत्री शैलपुत्री की पूजा करने से मूलाधार चक्र जागृत हो जाता है और साधकों को सभी प्रकार की सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं।

ब्रह्मचारिणी

दूसरे नवरात्र में मां के ब्रह्मचारिणी एवं तपश्चारिणी रूप को पूजा जाता है। जो साधक मां के इस रूप की पूजा करते हैं उन्हें तप, त्याग, वैराग्य, संयम और सदाचार की प्राप्ति होती है और जीवन में वे जिस बात का संकल्प कर लेते हैं उसे पूरा करके ही रहते हैं।

चन्द्रघंटा

मां के इस रूप में मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चन्द्र बना होने के कारण इनका नाम चन्द्रघंटा पड़ा तथा तीसरे नवरात्र में मां के इसी रूप की पूजा की जाती है तथा मां की कृपा से साधक को संसार के सभी कष्टों से छुटकारा मिल जाता है।

कूष्मांडा

अपने उदर से ब्रह्मंड को उत्पन्न करने वाली मां कूष्मांडा की पूजा चौथे नवरात्र में करने का विधान है। इनकी आराधना करने वाले भक्तों के सभी प्रकार के रोग एवं कष्ट मिट जाते हैं तथा साधक को मां की भक्ति के साथ ही आयु, यश और बल की प्राप्ति भी सहज ही हो जाती है।

स्कंदमाता

पंचम नवरात्र में आदिशक्ति मां दुर्गा की स्कंदमाता के रूप में पूजा होती है। कुमार कार्तिकेय की माता होने के कारण इनका नाम स्कंदमाता पड़ा। इनकी पूजा करने वाले साधक संसार के सभी सुखों को भोगते हुए अंत में मोक्ष पद को प्राप्त होते हैं। उनके जीवन में किसी भी प्रकार की वस्तु का कोई अभाव कभी नहीं रहता।

कात्यायनी

महर्षि कात्यायन की तपस्या से प्रसन्न होकर आदिशक्ति मां दुर्गा ने उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लिया और उनका कात्यायनी नाम पड़ा। छठे नवरात्र में मां के इसी रूप की पूजा की जाती है। मां की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि चारों फलों की जहां प्राप्ति होती है वहीं वह आलौकिक तेज से अलंकृत होकर हर प्रकार के भय, शोक एवं संतापों से मुक्त होकर खुशहाल जीवन व्यतीत करता है।

कालरात्रि

सभी राक्षसों के लिए कालरूप बनकर आई मां दुर्गा के इस रूप की पूजा सातवें नवरात्र में की जाती है। मां के स्मरण मात्र से ही सभी प्रकार के भूत, पिशाच एवं भय समाप्त हो जाते हैं।

महागौरी

आदिशक्ति मां दुर्गा के महागौरी रूप की पूजा आठवें नवरात्र में की जाती है। मां ने काली रूप में आने के पश्चात घोर तपस्या की और पुनः गौर वर्ण पाया और महागौरी कहलाई। मां की कृपा से साधक के सभी कष्ट मिट जाते हैं और उसे आर्थिक लाभ भी मिलता है।

सिद्धिदात्री

नौंवें नवरात्र में मां के सिद्धिदात्री रूप की पूजा एवं आराधना की जाती है, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है मां का यह रूप साधक को सभी प्रकार की ऋद्धियां एवं सिद्धियां प्रदान करने वाला है।

होली का उल्लास

देशभर में धूमधाम से मनाई गई होली खूब उड़ा रंग

होली के रंग में रंगा देश

देशभर में होली का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया जगह-जगह होली की धूम देखने को मिली वहीं मथुरा में मनाई जाने वाली होली पूरे भारत में प्रसिद्ध है, मथुरा में होली का त्योहार खूब धूम-धाम से मनाया गया यहां जमकर गाजे-बाजे के साथ होली के पर्व का स्वागत हुआ, इसके साथ ही यहां लट्ठमार होली खेली गई, मथुरा में 1 हफ्ते पहले से ही होली का पर्व शुरू हो जाता है, मथुरा में होली के पर्व को देखते हुए सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम किए गए, वहीं दूसरी तरफ बनारस में भी होली के त्यौहार की धूम देखने को मिली जहां बाबा विश्वनाथ के साथ भक्तों ने भस्म की होली खेली।

देश भर कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए धूम धाम के साथ रंगों का त्यौहार होली मनाया गया। कोरोना वायरस के कहर को देखते हुए लोगों ने सावधानी बरती और भीड़ में शामिल होने से परहेज किया। कोरोना वायरस के खतरे के चलते राष्ट्रीय राजधानी में होली के पर्व पर उत्साह में कमी देखी गई। उत्तर पूर्वी दिल्ली के क्षेत्र में अधिकतर लोगों ने अपने घरों के भीतर ही होली खेली और सड़क पर भारी सुरक्षाबल तैनात रहा। बहुत से लोगों ने जहां पूरी तरह होली नहीं मनाई, वहीं कुछ लोग बिना रंगों के एकत्रित होकर एक दूसरे को शुभकामनाएं देते दिखाई दिए।

कुछ लोगों ने केवल गुलाल से होली खेलने को प्राथमिकता दी। पंजाब और हरियाणा में भी होली के अवसर पर उदासीन माहौल रहा और लोगों ने भीड़ में शामिल होने से परहेज किया। हालांकि सिख पर्व होला मोहल्ला के अवसर पर आनंदपुर साहिब स्थित गुरुद्वारा केसगढ़ साहिब में बड़ी संख्या में लोगों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। राजस्थान में पिछले सप्ताह एक इतालवी दंपति में कोरोना वायरस की पुष्टि होने के बाद लोगों ने एहतियात और सुरक्षा को प्रमुखता दी। कोरोना वायरस के कारण जयपुर में होली के रंग में भंग पड़ा नजर आया और ज्यादातर लोगों ने छोटे समूहों में ही पर्व का आनंद लिया। मध्यप्रदेश में कमलनाथ नीत सरकार पर जहां राजनीतिक संकट छाया रहा वहीं विपक्षी दल भाजपा ने भोपाल में पार्टी कार्यालय में होली का पर्व जोरशोर से मनाया। पार्टी की एक महिला कार्यकर्ता ने कमलनाथ सरकार पर मंडराते अनिश्चितता के बादलों की ओर संकेत करते हुए कहा की वे होली और समय से पहले दिवाली आने के कारण खुश हैं। महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई और अधिकांश क्षेत्रों में होली का त्योहार कोरोना वायरस के खतरे के चलते फीका रहा। अधिकारियों की तरफ से लगातार एहतियात बरतने की अपील की जाती रही।

सिनेमा के पर्दे पर एक साथ दिखेंगी आलिया, अनुष्का और कटरीना

राधिका मदान की फिल्म 'अंग्रेजी मीडियम' के गाने 'कुड़ी नू नचने दे..' का प्रचार करने के लिए आलिया भट्ट, कटरीना कैफ, अनुष्का शर्मा समेत कई बॉलीवुड की शीर्ष अभिनेत्रियां आगे आयीं हैं। अंग्रेजी मीडियम के अभिनेता इरफान खान को 2018 में न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर का पता चला था। फिलहाल उनका इलाज चल रहा है जिसके कारण वह फिल्म और गाने के प्रचार के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। इस गाने के वीडियो में कटरीना कैफ, आलिया भट्ट, अनुष्का शर्मा, जाह्नवी कपूर, अनन्या पांडे, किआरा आडवाणी, कृति सेनन और खुद फिल्म की अभिनेत्री राधिका मदान नजर आएंगी।

जाह्नवी कपूर, अनन्या पांडे, किआरा आडवाणी, कृति सेनन राधिका मदान नजर आएंगी।

फिल्म के निर्देश होमी अदजानिया ने कहा कि अभिनेत्रियों के इस सहयोगी रवैये से बहुत खुश हूं।कटरीना ने कहा, इरफान और होमी मेरे पसंदीदा लोगों में से हैं इसलिए जब उन्होंने मुझे फोन किया तो मैं तुरंत तैयार हो गई। जब हम किसी के लिए कुछ कर सकते हैं, तो हमें जरूर करना चाहिए। इंडस्ट्री का मिजाज ऐसा ही होना चाहिए। आलिया ने कहा, मुझे यह गीत बहुत पसंद है और इसने मुझे और ऊंची उड़ान भरने के लिए प्रेरित किया। अनुष्का शर्मा ने कहा, जब होमी ने मुझे गाना भेजा था तबसे मैं इसे लगातार सुन रही हूं।यह गाना सभी को बहुत खुश करने वाला है।' 'इस बारे में फिल्म के निर्माता दिनेश विजन कहते हैं कि इस तरह का सहयोगपूर्ण रवैया उद्योग को बेहतर स्थान बनाता है। फिल्म 13 मार्च को रिलीज होगी।